mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-188 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
08 जुलाई 2024 सोमवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

महिला टी-20 ...
@ पेज 7

अयोध्या में राम मंदिर के शिखर पर लगेगा ध्वज स्तंभ

आंधी-पानी से 200 साल रहेगा सुरक्षित,राम कथा संग्रहालय का हो रहा जीर्णोद्धार

अयोध्या (एजेंसी)। राम मंदिर ट्रस्ट के सदस्यों ने अंतरराष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय का शनिवार को निरीक्षण कर वहां उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण की ओर से करवाए जा रहे संग्रहालय के मरम्मत के काम को देखा। इसमें संग्रहालय मे छत से ग्राउंड फ्लोर में गिरने वाले पानी को रोकने की समुचित व्यवस्था करने को कहा गया है। मंदिर ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्र ने बताया कि निर्माण इकाई संग्रहालय में गैलरी से लेकर उन सभी स्थलों को खूबसूरत बना रही है, जहां पुरातात्विक महत्व की पुरावशेषों को सुरक्षित और खूबसूरती के साथ डिस्प्ले किया जा सके। मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने निर्माण समिति की बैठक में रखे गए एजेंडों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मंदिर के 161 फुट ऊंचे शिखर पर लगने वाले ध्वज स्तंभ को लेकर तकनीकी और सुरक्षा के बिंदुओं पर चर्चा की गई। जिसमें शिखर के ऊपर 40 फुट उंचे ध्वज स्तंभ लगने पर इसे बंदरों और आधी तूफान से सुरक्षित कैसे रखा जाएगा। साथ ही आकाशीय बिजली से कैसे बचाया जाएगा। इस पर इंजीनियरों ने कहा कि जिस हुक से इसे शिखर पर लगाया जाएगा।

बड़ा खुलासा! अडानी के खिलाफ हुई इंटरनेशनल साजिश

● हिंडनबर्ग ने दो महीने पहले क्लाइंट से शेयर की थी रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी शॉर्ट-सेलर हिंडनबर्ग रिसर्च ने अडानी समूह के खिलाफ अपनी रिपोर्ट की एक कॉपी इसके पब्लिश होने से लगभग दो महीने पहले अपने क्लाइंट को शेयर की थी। इसे न्यूयॉर्क के हेज फंड मैनेजर मार्क किंग्डन को शेयर किया गया था। इसने ग्रुप की कंपनियों के शेयरों में उतार-चढ़ाव का फायदा उठाया था। बाजार नियामक सेबी ने यह दावा किया है। सेबी ने हिंडनबर्ग को भेजे अपने 46 पन्ने के कारण बताओ नोटिस में इस बारे में विस्तार से बताया है। सेबी ने बताया है कि कैसे अमेरिकी शॉर्ट सेलर हिंडनबर्ग को अडानी ग्रुप की 10 सूचीबद्ध कंपनियों के शेयरों के मूल्यांकन में गिरावट से फायदा हुआ। रिपोर्ट पब्लिश होने के बाद ग्रुप की कंपनियों में भारी-भरकम 150 अरब डॉलर की गिरावट आई थी। हिंडनबर्ग ने न्यूयॉर्क के हेज फंड और कोटक महिंद्रा बैंक से जुड़े ब्रोकर को पहले ही इस रिपोर्ट की कॉपी शेयर की थी।

संक्षिप्त समाचार

हाथरस कांड पर राहुल ने लिखी सीएम योगी चिट्ठी

● कांग्रेस नेता ने सीएम से की मुआवजा राशि बढ़ाने की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को चिट्ठी लिखी है। इसमें कांग्रेस सांसद ने हाथरस में मची भगदड़ के पीड़ितों के लिए मुआवजे की राशि

बढ़ाने का आग्रह किया है। इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों को कड़ी सजा दिए जाने की मांग की है। आदित्यनाथ को लिखे पत्र में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि मुआवजा जल्द से जल्द दिया जाना चाहिए और घायलों को उचित उपचार मुहैया कराया जाना चाहिए। हाथरस में मंगलवार को प्रवचनकर्ता भोले बाबा के सत्संग में भगदड़ मच गई थी। इसमें कुल 121 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें ज्यादातर महिलाएं थीं।

केजरीवाल के चेकअप के वक्त मौजूद नहीं रहेंगी पत्नी सुनीता

● कोर्ट बोला-कई कैदी डाइबिटीज के मरीज,उन्हें भी अटेंडेंट रखने की परमीशन नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। केजरीवाल को राऊज एवेन्यू कोर्ट ने शनिवार 6 जुलाई को एक और झटका दिया है। कोर्ट ने उनके मेडिकल चेकअप के दौरान उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल को मौजूद रहने की इजाजत देने इनकार कर दिया। हालांकि, कोर्ट ने सुनीता केजरीवाल को मेडिकल बोर्ड से मिलने की इजाजत दे दी है। साथ ही कहा है कि केजरीवाल की सभी मेडिकल रिपोर्ट भी सुनीता को दी जाएंगी।

मुंबई में पुणे जैसा कांड!

शिवसेना नेता के बेटे ने दंपति को मारी टक्कर,महिला की मौत

मुंबई (एजेंसी)। वर्ली में पुणे जैसा हादसा हुआ है। यहां एक तेज रफ्तार बीएमडब्ल्यू कार ने बाइक सवार दंपति को टक्कर मार दी। टक्कर लगने के बाद बाइक सवार महिला कार के बोनट

पर आ गिरी। कार सवार उसे 100 मीटर तक घसीटता हुआ ले गया। इस हादसे में महिला की मौत हो गई और उसका पति घायल हो गया। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। हादसे की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और कार चालक की तलाश शुरू कर दी।

पुरी में जगन्नाथ रथ यात्रा शुरू

दुर्लभ संयोग रहा खासः भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा रथों में विराजित होकर भ्रमण पर निकले

पुरी (एजेंसी)। पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा शुरू हो गई है। सबसे पहले बलभद्र का रथ खींचा गया है। रथ रुक-रुक कर आगे बढ़ रहा है। कुछ देर बाद सुभद्रा और जगन्नाथ जी का रथ खींचा गया। सूर्यास्त तक ही रथयात्रा चली और कल सुबह आठ बजे से रथयात्रा फिर शुरू होगी। जगन्नाथ मंदिर के पंचांगकर्ता डॉ. ज्योति प्रसाद के मुताबिक, भगवान को आम दिनों से 2 घंटे पहले जगाया गया। मंगला आरती सुबह 4 की बजाय रात 2 बजे हुई। मंगला आरती के बाद करीब ढाई बजे दशावतार पूजन हुआ। 3 बजे नैत्रोत्सव और 4 बजे पुरी के राजा की तरफ से पूजा की गई। सुबह 5.10 बजे के बाद सूर्य पूजा और करीब 5.30 बजे द्वारपाल पूजा हुई। सुबह 7 बजे भगवान को खिचड़ी भोग-प्रसाद लगाया गया। रथयात्रा में बहुत ज्यादा भीड़ की वजह से भगवान के नवयौवन दर्शन नहीं हो पाए। रथयात्रा में

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी शामिल हुईं। पीएम नरेंद्र मोदी ने रथयात्रा की देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। बलभद्र के बाद देवी सुभद्रा का रथ आगे बढ़ने लगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी भक्तों के साथ देवी का रथ खींचा। इसके बाद वे यहां से लौट गईं और कल सुबह फिर रथयात्रा में शामिल होंगी। वहीं आपको बता दें कि भगवान जगन्नाथ आषाढ़ शुक्ल द्वितीया से दशमी तिथि तक जन सामान्य के बीच रहते हैं। साथ ही इस अवधि में भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम और बहन सुभद्रा के साथ रथ पर विराजकर गुंडीचा मंदिर की ओर प्रस्थान करते हैं। यह भव्य आयोजन 10 दिनों तक चलता है। साथ ही 53 साल बाद यह यात्रा दो-दिवसीय होगी। ग्रह-नक्षत्रों की गणना के अनुसार इस साल दो-दिवसीय यात्रा आयोजित की जा रही है। वहीं आपको बता दें कि आखिरी बार 1971 में दो-दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया था। भगवान जगन्नाथ के रथ को नंदीघोष कहा जाता है। साथ ही इस रथ पर लहरा रहे ध्वज का नाम त्रिलोक्यमोहिनी नाम से जाता जाता है। वहीं इस रथ में 16 पहिए होते हैं। साथ ही यह रथ 13.5 मीटर ऊंचा होता है। वहीं इसमें 14 पहिये होते हैं। शास्त्रों के अनुसार जगन्नाथ भगवान की छोटी बहन सुभद्रा का रथ का नाम पद्मध्वज है। वहीं इस रथ को तैयार करने में काले और लाल रंग के कपड़ों का प्रयोग किया जाता है। रथ की रक्षक जयदुर्गा व सारथी अर्जुन होते हैं। भगवान जगन्नाथ की यह रथयात्रा सदियों से चली आ रही है। भक्त इस रथयात्रा में बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं।

झारखंड और गुजरात में हादसा,10 लोगों की मौत

देवघर-सूरत (एजेंसी)। झारखंड के देवघर में रविवार सुबह बड़ा हादसा हो गया है। शहर के सीता होटल के पास तीन मंजिला मकान सुबह पांच बजे के करीब भरभरा कर गिर गया। इस हादसे में 3 लोगों की मौत हो गई है। वहीं 4 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला

● सूरत में 6 मंजिला बिल्डिंग गिरी, 7 लोगों की गई जान

गया। घटना की सूचना मिलने के बाद एनडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और रेस्क्यू में जुटी हुई। 8 घंटे रेस्क्यू ऑपरेशन चला। टीम ने 4 लोगों को सुरक्षित निकाला गया, जिसमें तीन बच्चे शामिल हैं। इसमें दिनेश वर्णवाल, मुन्नी वर्णवाल, सत्यम और अनुपमा देवी घायल हैं, जिनका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है। वहीं, मृतकों की पहचान मनीष दत्त (50), सुनील यादव (35) और सुनील यादव की पत्नी सोनी देवी (28) के रूप में की गई है। देवघर में 22 जुलाई

देवघर में तीन मंजिला पुरानी इमारत गिरी, 3 की मौत

से श्रावणी मेला शुरू होने वाला है। ऐसे में क्षेत्र के लोग इसकी तैयारी में जुटे हुए हैं। उधर गुजरात के सूरत में एक दर्दनाक हादसा हो गया।

सूरत के सचिन इलाके में एक 6 मंजिला बिल्डिंग गिर गई। इस 6 मंजिला बिल्डिंग के मलबे में कई लोग दब गए। इस हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई है। इन सातों लोगों के शवों को बरामद कर लिया गया है। अभी और लोगों के भी दबे होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। बचाव कार्य में जुटी टीमें मलबे को हटाकर जांच में जुटी हुई हैं। जानकारी में सामने आया है कि सूरत के जो बिल्डिंग गिरी है। वह सिर्फ आठ साल पुरानी थी। यह बिल्डिंग 2016 में बनी थी। ऐसे में सवाल खड़ा हो रहा है क्या बहुमंजिला बिल्डिंग के निर्माण में सही निर्माण सामग्री का इस्तेमाल नहीं हुआ था। इस बिल्डिंग में छह परिवारों के रहने की बात सामने आई है।

टीएमसी नेता महुआ मोइत्रा की फिर से बढ़ गई मुश्किलें

● नए आपराधिक कानूनों के तहत दर्ज हुई एफआईआर

नई दिल्ली (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा की एक बार फिर से मुश्किलें बढ़ गई हैं। हाथरस कांड के बाद राष्ट्रीय महिला आयोग की प्रमुख रेखा शर्मा के खिलाफ किए गए एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर महुआ के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। नए आपराधिक कानून के तहत महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने को लेकर मामला दर्ज हुआ है। यूपी के हाथरस में पिछले दिनों भोले बाबा के सत्संग में भगदड़ मच गई थी, जिसके बाद 121 लोगों की जान चली गई। इस हादसे के बाद महिला आयोग प्रमुख रेखा शर्मा घटनास्थल पर पहुंची थीं। सामने आए वीडियो में रेखा शर्मा के लिए किसी और ने बारिश से बचाने के लिए छाता पकड़ा हुआ था। इस पर महुआ मोइत्रा ने एक्स पर लिखा था कि वह अपने बॉस का पजामा संभालने में बहुत व्यस्त हैं।

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में 6 आतंकी ढेर, 2 जवान शहीद

● 2 जगहों पर 2 दिन से एनकाउंटर जारी, राजौरी में आर्मी कैंप पर हमला

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में रविवार को लगातार दूसरे दिन मुठभेड़ जारी है। मुदरघम और चिन्निगम फ्रिसल में अब तक 6 आतंकी मारे गए हैं। दो जवान शहीद हुए हैं। मुदरघम में एक-दो आतंकियों और चिन्निगम फ्रिसल में एक और आतंकी के छिपे होने की संभावना है। मुदरघम में सुबह दो आतंकी मारे गए हैं। यहां शनिवार को एक आतंकी मारा गया था। एक जवान शहीद हो गया था। कुलगाम के चिन्निगम फ्रिसल में कल चार आतंकी मारे गए। एक जवान शहीद हुआ था। जम्मू-कश्मीर के डीजीपी आरआर स्वैन ने बताया कि दोनों जगहों पर मुठभेड़ जारी है। हमें स्थानीय आतंकियों के भी शामिल होने की खबर मिली है। 6 आतंकी मारे गए हैं। यह सुरक्षाबलों के लिए एक बड़ा मील का पत्थर है। दूसरी तरफ, जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के मंजाकोट इलाके में आतंकियों ने रविवार सुबह एक आर्मी कैंप पर हमला कर दिया। इसमें एक जवान घायल हो गया। जवानों की जवाबी कार्रवाई के बाद आतंकी घने जंगल के रास्ते भाग गए। सेना और पुलिस ने सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है।

कुलगाम के मुदरघम में शनिवार (6 जुलाई) की सुबह सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन के तहत सर्च ऑपरेशन शुरू किया था। इस दौरान आतंकियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी की थी, जिसमें हरियाणा के रहने वाले लांस नायक प्रदीप नैन शहीद हो गए। वहीं, चिन्निगम में शनिवार की दोपहर में मुठभेड़ शुरू हुई थी। शाम होते-होते जवानों ने 4 आतंकियों का एनकाउंटर कर दिया। ड्रोन कैमरे में सभी की लाशें दिखीं।

पार्टी ऑफिस में नहीं दफनाया जाएगा बीएसपी नेता का शव

मद्रास हाईकोर्ट ने कहा-ऑफिस संकरी गली में बना, वहां भगदड़ का खतरा

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के चेन्नई में मारे गए बहुजन समाज पार्टी प्रदेश अध्यक्ष के. आर्मस्ट्रॉन्ग के शव को पार्टी कार्यालय में नहीं दफनाया जाएगा। मद्रास हाईकोर्ट ने पार्टी कार्यालय में उनका शव दफनाए जाने की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया है। याचिका मृत नेता की पत्नी के. पोरकोडी ने लगाई थी। कोर्ट ने कहा कि बीएसपी ऑफिस संकरी गली में बना है। वहां ज्यादा जगह नहीं है। ऐसे में अगर वहां ज्यादा लोग जमा होते हैं तो भगदड़ का खतरा हो सकता है। कोर्ट ने कहा कि बसपा नेता के शव को चेन्नई से लगे तिरुवल्लुवर जिले में एक एकड़ के निजी प्लॉट में दफनाया जा सकता है। कोर्ट ने यह निर्देश भी दिया कि शव की अंतिम यात्रा शांतिपूर्वक निकाली जानी चाहिए। मृत नेता की पत्नी ने उनका शव दफनाने के लिए जो जगह चुनी है वह ठीक नहीं है।

उत्तराखंड की बारिश बढ़ा रही है मुश्किलें,दिल्ली में बाढ़ का संकट!

नई दिल्ली (एजेंसी)। जुलाई 2023 में मॉनसून के दौरान यमुना में ऐसी बाढ़ आई कि उसने पिछले सारे रेकॉर्ड तोड़ दिए। 13 जुलाई 2023 को पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर यमुना का जलस्तर 207.49 मीटर रहा।

● देवभूमि के हथिनी कुंड से छोड़ा गया 18,865 यूसेक पानी मचाएगा हाहाकार

एक्सपर्ट के अनुसार बीते साल बाढ़ आने के बाद भी यमुना पर काम न के बराबर हुआ है। कोर्ट के आदेशों के बावजूद डीडीए समेत कई एजेंसियों ने इसमें ढिलाई बरती है। ऐसे में इस बार भी उत्तराखंड में अधिक बारिश आने पर हालात बेकाबू होने के आसार हैं। साउथ एशिया नेटवर्क ऑन डेम्स, रिवर्स एंड पिपल्स के भीम सिंह रावत ने बताया कि जुलाई 2023 में यमुना की बाढ़ से काफी संख्या में लोग प्रभावित हुए थे। उस बाढ़ से साफ था कि डीडीए, जलबोर्ड आदि यमुना के फ्लड प्लेन की अहमियत समझने और उसे मैनटेन करने में

विफल रहे हैं। एक साल बाद भी सीवीसी (सेंट्रल वॉटर कमीशन) ने उस बाढ़ का कोई रिजन नहीं दिया है। 11 जुलाई 2023 को हथनीकुंड बैराज से 3.6 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया था। यह 3 सितंबर 1978 में छोड़े गए पानी से लगभग आधा है। उस दिन 7 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया था।

नूंह में फिर निकाली जाएगी ब्रजमंडल शोभा यात्रा

हिंदू संगठनों ने शुरू की तैयारी, प्रशासन हो गया सतर्क, अभी नहीं ली गई डीसी और एसपी से यात्रा की अनुमति

नूंह (एजेंसी)। हिंदू संगठनों द्वारा नूंह (मेवात) जिले में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी ब्रजमंडल शोभा यात्रा निकालने की बात कही गई है। इस यात्रा को लेकर पुलिस प्रशासन अभी से अलर्ट हो गया है ताकि पिछले वर्ष 31 जुलाई को यात्रा के दौरान हुए हिंसा और आगजनी जैसी घटनाओं का दोबारा सामना न करना पड़े। पिछले साल के दंगो में करीब 7 लोग मारे गए थे और कई घायल हुए थे। सैकड़ों वाहनों को आग के

हवाले किया गया तथा 100 से अधिक हिंसा के आरोपी आज भी जेल में बंद हैं। यही कारण है कि इस संभावित यात्रा पर जिला प्रशासन ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश के साथ ही आमजन की भी नजरें टिकी हुई हैं। हालांकि विश्व हिंदू परिषद,बजरंग दल,गोरक्षा दल और अन्य हिंदू संगठनों द्वारा अभी तक शोभायात्रा के लिए प्रशासन से कोई अनुमति नहीं ली गई है। लेकिन कुछ संगठन के पदाधिकारियों ने इस यात्रा को 22 जुलाई को निकालने की बात जरूर कही है।

संक्षिप्त समाचार

सिंधी कॉलोनी पंचायत भोपाल का पौधारोपण अभियान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत सिंधी कॉलोनी पंचायत ने रविवार को पौधारोपण किया, इस दौरान अपनी-अपनी मां के नाम से 51 पौधे रोपे गए। पंचायत के अध्यक्ष कमलेश गंगवानी ने बताया कि पौधे रोपने वाले सभी साथियों से कहा गया है कि वे इन पौधों की देखरेख भी करें। ताकि नन्हें पौधे वृक्ष बन सकें। गंगवानी ने कहा कि देश में बढ़ते तापमान को देखते हुए प्रधानमंत्री ने अभियान चलाया गया है, उसमें हम भी योगदान देने की कोशिश कर रहे हैं। पंचायत के महासचिव जगदीश बदलनी ने बताया कि लगाए गए 51 पौधों का हमने अपनी-अपनी माताओं के नाम पर नामकरण भी किया है। जिससे उपरोक्त व्यक्ति उस पौधे की जिम्मेदारी लेकर देखरेख करने में सक्रिय भूमिका निभा सके। इस पौधारोपण कार्यक्रम में भाजपा नेता पप्पू पंजाबी के साथ समिति के अन्य पदाधिकारी भी मौजूद थे।

श्री गौर राधा मदन गोपाल मंदिर में महोत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शांति नगर स्थित श्री गौर मदन गोपाल मंदिर से दोपहर एक बजे रथयात्रा प्रारंभ हुई। महाप्रभु जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और बड़े भाई बलभद्र रथ पर सवार हुए। इससे पहले मंदिर में भगवान का श्रृंगार हुआ और महाआरती की गई। रथ पर विराजमान होने के बाद फिर आरती हुई, जिसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल हुए। जगन्नाथ स्वामी के जयघोष के बीच रथ रवाना हुआ। प्रत्येक गली-मोहल्ले में श्रद्धालुओं ने भगवान की पूजा की और प्रसाद चढ़ाया। मंदिर की व्यवस्थापक दीपिका माहेश्वरी ने बताया कि 40 साल से यह परंपरा चल रही है। ज्वर लीला पूरी होने के बाद भगवान शनिवार को फूल बंगला में विराजमान हुए। भजन-कीर्तन के बाद भगवान की विश्राम किया। रविवार सुबह से भगवान का अभिषेक और श्रृंगार किया गया। भगवान को भोग लगाया गया और फिर रथयात्रा प्रारंभ हुई, जो नादरा बस स्टैंड, घोड़ा नक्कास, मंगलवारा, इतवारा, चौक बाजार, लखेरापुरा, भवानी चौक सोमवारा, बाल विहार, भोपाल टॉकीज होती हुई वापस मंदिर पहुंचेगी। रथ में महाप्रभु जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और बड़े भाई बलभद्र विराजमान थे। यात्रा से लौटने पर मंदिर में महाप्रभु की पूजा गई। यात्रा में ब्रास बैंड, ढोल-ताशे, धर्म ध्वज, कीर्तन मंडली शामिल रहेंगी।

लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ हायर सेकंड्री स्कूल भोपाल में विधिक शिविर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लक्ष्मीदेवी विक्योमल सर्राफ हायर सेकंड्री स्कूल के विद्यार्थियों ने शनिवार को परिसर में 200 से अधिक पौधे रोपे। जिला विधिक प्राधिकरण के इस कार्यक्रम में जिला विधिक प्राधिकरण भोपाल के न्यायाधीश मृदुल लटौरिया, स्वपनिल वर्मा व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड एवं सृष्टि कुशवाहा व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। लटौरिया ने कहा कि लड़कियों को अपनी सुरक्षा स्वयं करनी चाहिए, वे निडर होकर रहें और साहसी बनें। कोई परेशान करे, तो टेलीफोन नंबर 0755-2555935 एवं टोल फ्री नंबर 15100 पर सूचना दें। पुलिस तुरंत कार्यवाही करेगी। मौलिक कर्तव्यों और अधिकारों की जानकारी देते हुए न्यायाधीशों ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण भी हमारा मौलिक कर्तव्य है। हमें अपने पर्यावरण की सुरक्षा एक पेड़ लगाकर करनी चाहिए। उन्होंने संकल्प दिलाया कि आप अपने-अपने जन्मदिवस पर एक पेड़ अवश्य लगाएं और उसकी देखरेख भी करें। इस तरह हम अपने पर्यावरण की सुरक्षा कर सकते हैं। पॉलीथिन का प्रयोग न करें एवं अपने आसपास जिन्हें भी पॉलीथिन का प्रयोग करते देखें तो उन्हें अवश्य रोकें। उन्हें पॉलीथिन से होने वाले पर्यावर्णीय नुकसान से अवगत कराएं।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा भोपाल ने किया पौधारोपण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की प्रदेश इकाई के पदाधिकारियों और सदस्यों ने शनिवार को गौतम नगर भोपाल में अपनी-अपनी मां के नाम से पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। महासभा के पदाधिकारियों ने कहा कि यह सिर्फ एक दिन की रस्म अदायगी नहीं है। समाज इस दिशा में निरंतर काम करेगा। इस अवसर पर मंत्री विश्वास सारंग, प्रदेश अध्यक्ष सुनील श्रीवास्तव, दिनेश श्रीवास्तव जिला महामंत्री, राजकुमार श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष, अनिल श्रीवास्तव, दिनेश सक्सेना, सौरभ कुलश्रेष्ठ, अमोल सक्सेना, आलोक श्रीवास्तव, सौरभ खरे, आलोक श्रीवास्तव, चित्रांश खरे सहित बड़ी संख्या में कायस्थ बंधु उपस्थित हुए। यहां आगामी रविवार को कायस्थ प्रतिभा सम्मान को लेकर भी चर्चा हुई और सभी लोगों ने अपने-अपने सुझाव दिए।

मरीज़ों को सहज एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं का प्रदाय सुनिश्चित करें-उपमुख्यमंत्री शुक्ल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से मध्यप्रदेश के चिकित्सा महाविद्यालयों के अधिष्ठाताओ ने भोपाल के निवास कार्यालय में सौजन्य भेंट की। अधिष्ठाताओं ने पे-प्रोटेक्शन, लीव-प्रोटेक्शन, सर्विस-प्रोटेक्शन और नॉन-प्रैक्टिसिंग एलाउंस के बारे में उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल द्धारा किये जा रहे प्रयासों के लिये आभार व्यक्त किया। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिये कि चिकित्सा महाविद्यालयों में छात्रों की शिक्षा बेहतर करने के लिये प्रयास करें। समस्त अधिष्ठाता अस्पताल के अधीक्षकों के साथ समन्वय कर मरीजों को सहज और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सकीय सेवाओं के प्रदाय के लिए व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करें।

उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल को अधिष्ठाताओं ने महाविद्यालय के संचालन, अधोसंरचणात्मक विकास एवं उन्नयन, प्रशासनिक व्यवस्था, वित्तीय आवश्यकता और मेंटेनेंस सहित अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के संबंध में अवगत कराया। उप-मुख्यमंत्री ने शीघ्र आवश्यक सहयोग मुहैया कराने की बात कही। मेडिकल कॉलेज में प्रशासकीय अधिकारी (वित्त) की नियुक्ति, महाविद्यालयों के उन्नयन, हॉस्टल और अस्पतालों के सिविल और इलेक्ट्रिक उपकरणों के मेंटेनेंस, लेक्चर हॉल और प्रदर्शक रूम को स्मार्ट क्लास में विकसित करने के लिये बजट उपलब्ध कराने का अधिष्ठाताओं ने अनुरोध किया। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में सहभागिता के लिये नीति बनाने का अनुरोध किया ताकि चिकित्सा शिक्षक और छात्र अपनी रिसर्च को विश्वस्तरीय प्लेटफार्म पर प्रस्तुत कर सकें।

बैठक में डॉ प्रमेंद्र सिंह ठाकुर अधिष्ठाता बीएमसी सागर, डॉ. कविता सिंह अधिष्ठाता जीएमसी भोपाल, डॉ. धाकड अधिष्ठाता ग्वालियर,डॉ सुनील अग्रवाल अधिष्ठाता रीवा, डॉ. परमहंस अधिष्ठाता शिवपुरी, डॉ. मनीष निगम अधिष्ठाता विदिशा और डॉ मरावी अधिष्ठाता दतिया शामिल हुए।

कांग्रेस के हारे प्रत्याशियों ने कहा, हम जनता तक नहीं पहुंच रहे यही सबसे बड़ी कमजोरी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के पराजित प्रत्याशियों ने एक बार फिर हार के लिए कमजोर संगठन, रणनीति, प्रचार के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलने और भितरघात को बड़ा कारण बताया है। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित दो दिवसीय मंथन में प्रदेश प्रभारी व पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव जितेंद्र सिंह, प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने संभागवार बैठक कर एक-एक प्रत्याशी से उनकी प्रतिक्रिया ली। अधिकतर प्रत्याशियों ने कहा कि वह या उनका संगठन जनता तक नहीं पहुंच पाया। राष्ट्रीय महासचिव ने 2028 में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव को लेकर रणनीति के साथ जुटने के लिए सभी को कहा है। तीनों पदाधिकारियों ने प्रत्याशियों से यह भी पूछा कि लगभग छह माह के अंतर में हुए लोकसभा चुनाव में पार्टी को मिले मतों में बड़ा अंतर कैसे आ गया। दरअसल, विधानसभा चुनावी में बड़ी हार के बाद लोकसभा चुनाव में पार्टी के प्रदेश से सफाए ने राष्ट्रीय नेतृत्व की चिंता बढ़ा दी है। लोकसभा चुनाव में हर जगह अच्छे प्रदर्शन के बाद प्रदेश में खाता नहीं खोल पाने की वजह पार्टी खोज रही है। इसके लिए जून में तीन सदस्यीय फैक्ट फाइडिंग कमेटी ने भी लोकसभा चुनाव में हार के कारण जानने के लिए बैठक की थी। दोनों चुनाव में हार के ठोस कारण जानने के बाद अगले चुनावों के लिए पार्टी रणनीति बनाएगी। रविवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में ही प्रदेश चुनाव समिति, राजनीतिक मामलों की समिति एवं वरिष्ठ नेताओं के साथ बैठक होगी। पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता जनता के बीच जाएंगे और सरकार की वादाखिलाफी को बताएंगे। बैठक के पहले सभी प्रत्याशियों को पार्टी के तरफ से एक फार्म दिया गया था, जिसे भरकर उन्हें सौंपना था।

मध्य प्रदेश के जिला अस्पतालों के बाद कुछ सीएचसी और सिविल अस्पतालों को पीपीपी मोड पर देने की तैयारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के पांच जिला अस्पतालों को पीपीपी मोड पर देने के सरकार के निर्णय के बाद अब कुछ सिविल अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को भी पीपीपी मोड पर देने की तैयारी है। स्वास्थ्य संचालनालय इस संबंध में प्रस्ताव तैयार कर रहा है। शीघ्र ही इसे स्वीकृति के लिए कैबिनेट में लाया जाएगा। जिला अस्पतालों की तरह इन स्वास्थ्य संस्थाओं में भी निजी निवेशक 25 प्रतिशत बिस्तर प्राइवेट रख सकेगा। सुविधाएं बढ़ाकर निवेशक इन बिस्तरों में भर्ती रोगियों से निर्धारित शुल्क वसूल सकेगा।

जबलपुर, भोपाल और इंदौर में कई सिविल अस्पताल शहर के बीच में होने के साथ ही साधन संपन्न हैं। यहां रोगियों की संख्या जिला अस्पतालों की तरह रहती है। इसी तरह से दूसरे जिलों में कुछ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बहुत अच्छी स्थिति में हैं। वहां सीजर डिलीवरी की सुविधा भी है। मापदंड के अनुसार पांच विषय विशेषज्ञ भी हैं। ऐसे में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग अब उन स्वास्थ्य संस्थाओं की सूची तैयार कर रहा

है जिन्हें पीपीपी मोड पर दिया जा सकता है। कैबिनेट से स्वीकृति मिलने के बाद इन्हें पीपीपी मोड पर देने के लिए ऑफर बुलाए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि इसी वर्ष मार्च में राज्य सरकार ने प्रदेश के पांच जिलों में निजी मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए वहां के जिला अस्पतालों को पीपीपी मोड पर देने का निर्णय लिया था। इनमें कटनी, पन्ना और मुरैना में पीपीपी से कालेज खोलने के लिए निजी निवेशकों से ऑफर बुलाए गए हैं। दो अन्य स्थानों के लिए भी शीघ्र ही निविदा जारी करने की तैयारी है।

समाज सेवक के रूप में कार्य सम्पादित करें समिति प्रबंधक-सहकारिता मंत्री श्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता एवं खेलकूद युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास सारंग ने शनिवार कोमध्यप्रदेश के 38 जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों में आईबीपीएस के माध्यम से चयनित समिति प्रबंधको को संबोधित करते हुए कहा कि जो भी दायित्व उन्हें मिला है, उसे पूरी ईमानदारी से निभायें। कोई भी काम छोटा नहीं होता। सफल इंसान वह है जो प्रतिदिन नए ढंग से अपने काम को करते है।

आज आप यहां से यह संकल्प लेकर जाएं कि आज के प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपको जो चार महत्वपूर्ण बिंदु ऋण वितरण, वसूली, उपार्जन एवं नवाचार संबंधी जो महत्वपूर्ण मार्गदर्शन मिला है, उसका पूरा अनुसरण करेंगे। आप अपनी समिति में

सेवा भाव से अपने वरिष्ठ अधिकारियों एवं कनिष्ठ अधिकारियों तथा समिति के सभी सदस्यों के साथ बेहतर तालमेल रखकर अपने कर्तव्य का निष्पादन भी करेंगे। मंत्री श्री सारंग अपेक्स बैंक एवं मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ संयुक्त तत्वाधान में भोपाल के न्यू मार्केट स्थित समन्वय भवन में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। श्री सारंग ने समिति प्रबंधकों से संवाद भी किया। मंत्री श्री सारंग ने युवा साथियों से आह्वान किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सहकार से समृद्धि के मंत्र को साकार करने की दिशा में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के सपने मध्यप्रदेश में आप सभी के माध्यम से साकार हों। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि आप बेहतर ढंग से अपनी सेवाएं समितियां को उपलब्ध कराएंगे तो समितियॉ निश्चित रूप से प्रगति पथ पर अग्रसर होंगी।

इस्कॉन मंदिर पटेल नगर में गुंडीचा मार्जन लीला का वर्णन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के पटेल नगर स्थित इस्कॉन मंदिर में शनिवार को अच्युत कृष्ण प्रभु ने गुंडीचा मार्जन लीला का अत्यंत मधुर वर्णन किया। लीला का वर्णन श्री चैतन्य चरितामृत से किया गया। कृष्ण प्रभू ने बताया कि चैतन्य महाप्रभु ने गुंडिचा मंदिर में जमा हुई धूल को साफ किया और उसके पश्चात झाड़ू व पानी से सारे मंदिर का 2 से 3 बार मार्जन किया। उसके बाद वह अपने अंग वस्त्र यानि अपने कपड़ों से मंदिर को साफ करते हैं ताकि थोड़ी सी धूल-मिट्टी वहां दिखने न पाए। कृष्ण प्रभू ने कहा कि अगर हमें भगवान को अपने मन में विराजमान करना है तो सबसे पहले अपने मन से हर तरह की मैल का त्याग करना होगा। उन्होंने बताया की कैसे चैतन्य महाप्रभु अपने पार्षदों के साथ मिलकर पुरी में गुंडीचा मंदिर की सफाई करते थे। चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ जी के लिए झाड़ू से, अपने वस्त्रों से तथा अपने कोमल हाथों से सिंहासन साफ करते थे। और सभी भक्त अलग अलग सरोवरों तथा कुओं से जल इकट्ठा करके मंदिर की धुलाई करते थे। अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि अगर हमें भगवान को अपने मन में विराजमान करना है तो सबसे पहले अपने मन से हर तरह की मैल का त्याग करना होगा। भक्ति के लिए अपने हृदय को साफ और दोष रहित बनाना अनिवार्य माना गया है। दूषित मन में हम भगवान को कभी नहीं बिठा सकते हैं, क्योंकि हमारा मन मैल से भरा हुआ है तो ऐसे में मन को मैल रहित बनाने के लिए उसकी साफ-सफाई यानि दोष रहित होना जरूरी है और ये केवल भगवान की सेवा और भक्ति से ही संभव हो सकता है। इस मधुर लीला को भक्त सुनकर दिव्य तृप्ति को प्राप्त हुए। इसके पश्चात सभी भक्तों ने जगन्नाथ महाप्रसाद ग्रहण किया।

भोपाल में आधा दर्जन से अधिक स्थानों पर निकलेंगी रथ यात्राएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बीते 13 दिन से शयन कक्ष में रहकर स्वास्थ्य लाभ ले रहे महाप्रभु जगन्नाथ के स्वास्थ्य में अब सुधार है। उनको शनिवार से पकवान और मिठाई का भोग लगाया गया। पूर्ण स्वस्थ होने पर महाप्रभु रविवार को यानी आज शयन कक्ष से बाहर आएंगे। रथ पर सवार होकर श्रद्धालुओं को दर्शन देने शहर में निकलेंगे। इस्कान भोपाल बीवायसी की ओर से भगवान जगन्नाथ, बलदेव, सुभद्रा महारानी की रथयात्रा निकाली जाएगी। इस्कान मंदिर के अध्यक्ष रसानंद दास ने बताया कि रथयात्रा रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म क्रमांक एक के सामने से शुरू होगी। यूं तो इस रथयात्रा में कई आकर्षण होंगे, लेकिन हाइड्रोलिक रिमोट कंट्रोल्ड रथ सबसे खास होगा। इस रथ को जरूरत के हिसाब से ऊंचा और नीचा किया जा सकता है। इसके अलावा रथयात्रा में घोड़े, बग्गी, ऊंट, बैंड, कीर्तन पार्टी आकर्षण का केंद्र होंगे। रथ यात्रा के पहले भगवान जगन्नाथ को पांच सौ से ज्यादा भोग अर्पित किए जाएंगे। इन्हें भक्तगण अपने घर से बनाकर लाएंगे। सात जुलाई को दोपहर एक बजे रानी कमलापति रेलवे प्लेटफार्म क्रमांक एक के सामने से शुरू होगी, जो सात नंबर चौराहा, नेशनल अस्पताल, प्रियदर्शिनी मार्केट, बिट्टन मार्केट, 1100 क्वार्टर, गणेश मंदिर, शैतान सिंह चौराहा, शाहपुरा, त्रिलंगा, रोहित नगर से होते हुई बावड़िया कलाा चौराहा पर समाप्त होगी। समापन स्थल पर दस हजार लोगों का भंडारा रखा गया है।

श्री गौर राधा मदन गोपाल मंदिर शांति नगर बैरसिया रोड से निकलने वाली रथ यात्रा नादरा बस स्टैंड, घोड़ा नक्कास, मंगलवारा, इतवारा, चौक बाजार लखेरापुरा, भवानी चौक सोमवारा, बाल विहार, भोपाल टाकीज से वापस मंदिर परिसर में संपन्न होगी। भगवान जगन्नाथ की इस रथयात्रा में ब्रास बैंड, ढोल-ताशे, धर्म-ध्वज कीर्तन मंडली भी शामिल रहेगी। श्यामला हिल्स पर स्थित मानस भवन से रथ यात्रा निकाली जाएगी। यह रथयात्रा रोशनपुरा चौराहा, न्यू मार्केट, रंगमहल चौराहे से होते हुए पुन: मानस भवन पर समापत होगी। यह आयोजन वृंदावन से पधारे वैष्णव परंपरा के आचार्य श्री हरेकृष्ण दास ब्रह्मचारी जी महाराज के सान्निध्य में हो रहा। इसमें भारत भर के कई भक्तजन, संकीर्तन कार पधारे हैं। सभी भक्त बहुत ही उत्साह के साथ भगवान जगन्नाथ के सामने नृत्य करते हुए इस उत्सव में सम्मिलित होते हैं।

राजधानी के लखेरापुरा श्रीजी मंदिर में सात जुलाई को रथयात्रा महोत्सव मनाया जा रहा है। मंदिर के प्रमुख पंडित श्रीकांत शर्मा ने बताया कि जगन्नाथ जी में रथयात्रा आषाढ़ दूज के दिन होती है। पुष्टिमार्ग में महाप्रभुजी वल्लभाचार्य इसका नियम पुष्य नक्षत्र वाले दिन बताया है। जिस दिन पुष्य नक्षत्र हो, उसी दिन रथयात्रा होती है तो इस वर्ष सात जुलाई को यह संयोग रहेगा। रथ लकड़ी से निर्मित 124 वर्ष पुराना है। इसमें आठ पहिए और 16 खंभे हैं। इस रथ को गुजरात के सनखेड़ा के कारीगरों ने बनाया था। पहले तो यह पूरी तरह लकड़ी का था पर अब इसके ऊपरी (छतरी) को 51 साल पहले इसको चांदी का कराया गया है।

ऊर्जा मंत्री तोमर ने शिविर लगाकर की जन-सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एक ही छत के नीचे स्थानीय बस्तियों के लोगों की समस्याओं का निराकरण करने के उद्देश्य से ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शनिवार को ग्वालियर में जन-सुनवाई की। बहोड़ापुर स्थित नगर निगम के क्षेत्रीय कार्यालय क्र.-1 परिसर में यह जन-सुनवाई हुई। इस दिन सुबह से ही हो रही तेज बारिश में मंत्री श्री तोमर लोगों के बीच पहुँचे और एक ङ्क एक कर सभी की समस्यायें सुनीं।

शिविर में सामने आईं जल भराव संबंधी समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये उन्होंने जन-सुनवाई के बाद अधिकारियों व क्षेत्रीय नागरिकों के साथ संबंधित बस्तियों का मौका मुआयना भी किया। मंत्री श्री तोमर ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि पानी की निकासी ठीक न होने से आ रही जल भराव संबंधी समस्याओं को गंभीरता से लें। उन्होंने निर्देश दिए कि तात्कालिक रूप से पानी निकासी का इंतजाम तो करें ही, साथ ही इस समस्या के स्थायी समाधान के लिये पुख्ता कार्ययोजना बनाकर मूर्तरूप दें। इसके लिए धन की कमी नहीं आने दी जायेगी। उन्होंने जन-सुनवाई में मौजूद

नागरिकों को भरोसा दिलाया कि उनकी हर समस्या का समाधान समयबद्ध कार्यक्रम के तहत किया जायेगा। शिविरों का सिलसिला लगातार जारी रहेगा। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर द्वारा की गई जन-सुनवाई में बहोड़पुर, विनयनगर, आनंदनगर, मेवाती मोहल्ला, अपना घर कॉलोनी, शीलनगर, घोसीपुरा, बारह बीघा व चौबीस बीघा सहित शहर के वार्ड क्र.-1, 3 व 5 की अन्य बस्तियों से आए लगभग 250 लोगों की समस्याओं की सुनवाई की गई। उन्होंने जन-सुनवाई में मौजूद अधिकारियों के माध्यम से बहुत सी समस्याओं का मौके पर ही निराकरण कराया। साथ ही जिन समस्याओं का निराकरण मौके पर संभव नहीं था, उन्हें सूचीबद्ध कराकर समय-सीमा में निराकृत करने के निर्देश जिला प्रशासन व नगर निगम के अधिकारियों को दिए।

5 मंजिला बिल्डिंग ढही, एमपी के 5 लोगों की मौत

गुजरात के सूरत में हादसा, मृतक सीधी जिले के रहने वाले, इनमें दो सगे भाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। गुजरात के सूरत में 5 मंजिला इमारत ढह गई। हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में 5 लोग मध्यप्रदेश के सीधी जिले के है। एक महिला गंभीर रूप से घायल है। टीम रेस्क्यू में जुटी है। अभी मलबा हटाने का काम चल रहा है।

हादसा शनिवार दोपहर में सूरत शहर के इंडस्ट्रियल एरिया में हुआ। रेस्क्यू में जुटी टीम को रविवार सुबह तक 7 लोगों के शव मिल चुके थे। बिल्डिंग 2017 में ही बनी थी।

सिर्फ 7 साल में ही पूरी बिल्डिंग के ढह जाने से इसके निर्माण की गुणवत्ता का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। सीधी के सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने सूरत सांसद मुकेश दलाल से बात की है। उन्होंने सभी शवों को सीधी पहुंचाने के लिए उनसे आग्रह किया।

दो से तीन लोगों के दबे होने की आशंका-

शनिवार रात 9.10 बजे पहला शव निकाला गया। इसके बाद दूसरा शव 11.50 बजे, तीसरा 4 बजे, चौथा साढ़े 4 बजे और 4.45 पर एक साथ तीन शव निकाले गए। अब भी बिल्डिंग का मलबा हटाने का काम चल रहा है। आशंका है कि मलबे में 2-3 लोग और दबे हो सकते हैं।

मजदूरी करने गए दो सगे भाइयों की भी मौत-

हादसे में जान गंवान वाले सीधी के पांच लोगों में दो सगे भाई थे। ये सभी मझौली थाना क्षेत्र के परासी और दियाडोल गांव के रहने वाले थे। सूरत मजदूरी करने गए थे। हादसे में जान गंवाने वालों के नाम अनमोल शालीग्राम, शिवपूजन शोखीलाल केवट, परवेज शोखीलाल केवट, लालजी बमभोली केवट, अभिषेक केवट, ब्रजेश हीरालाल गोड, हीरामडी बमभोली केवट हैं। हादसे में घायल कशिश शर्मा को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बिल्डिंग के दो फ्लोर पर ही लोग रहते थेरू शुभम-

इमारत में रहने वाले शुभम ने बताया कि उनका 17 साल का छोटा भाई साहिल है। हादसे के दौरान वह कमरे में ही था। पूरी बिल्डिंग के दो फ्लोर ही भरे हुए थे। फर्स्ट और सेकंड फ्लोर पर ही लोग रहते थे। नीचे दो रूम और उसके ऊपर 6 रूम में लोग रहते थे।

शुभम ने बताया- बाकी के फ्लोर खाली थे। हर एक रूम में कम से कम 5 लोग तो रहते थे। इस तरह दोनों फ्लोर में 20 से 25 लोग रहते थे। मेरे बगल में एक कमरा था, जिसमें एक आंटी रहती थीं। वे चार दिन पहले ही अपने भाई के साथ यहां रहने आए थे।

होटल-मैरिज हाउस खुद करेंगे अपने कचरे का प्रबंधन

स्वच्छ वार्ड रैंकिंग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने पर मिलेगा पुरस्कार

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 के प्रयोजन हेतु मुख्य नगरपालिका अधिकारी माधुरी शर्मा ने रविवार की शाम 4 बजे नगर पालिका सभाकक्ष में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे स्वच्छ वार्ड रैंकिंग में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों कर्मचारियों को नगरपरिषद से सम्मानित करने की घोषणा की।

इस अवसर पर पूर्व मुख्य नगरपालिका अधिकारी एवं स्वच्छता विशेषज्ञ डी.डी. तिवारी ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि स्वच्छ वार्ड रैंकिंग के अंतर्गत उस वार्ड में स्थित होटल मैरिज हाउस अस्पताल स्कूल रहवासी संघ बाजार संघ कार्यालय की रैंकिंग की जायेगी।

जिसमे तीन सबसे स्वच्छ वार्डों में स्थित उपरोक्त संस्थानों को पुरस्कृत किया जायेगा किन्तु इन संस्थानों को गीले कचरे से स्थलीय कम्पोस्टिंग करना होगी। तथा सूखा कचरा नीले डस्टबिन में संग्रहित कर नगरपालिका के वाहन में डालना होगा परिसर कचरा मुक्त पॉलीथिन मुक्त रखना होगा तथा शौचालय उपयोग के अनुकूल संधारित करना होगा।

इस अवसर पर पटेल मैरिज हाउस संचालक ने कचरे में आग लगाने वाले होटल, मैरिज हाउस को नगरपालिका से दण्डित करने का सुझाव दिया नगरपालिका की इस पहल का स्वागत किया।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी माधुरी शर्मा ने बताया कि नगरपालिका से खुद मूल्यांकन प्रपत्र सभी संस्थानों को उपलब्ध कराए जाएंगे। साथ ही उनका नगरपालिका की ओर से गठित समिति का परीक्षण किया जाएगा। मेरी अपेक्षा है कि सभी होटल, मैरिज हाउस गाइडलाइन का पालन कर रैंकिंग में पहला स्थान प्राप्त करें।

इस दौरान स्वच्छता ब्राड एम्बेसडर विपिन अवस्थी, एडवोकेट आनंद शर्मा, सोयलपुरी गोस्वामी, राकेश शर्मा, नाथूराम साहू, पूर्व स्वास्थ्य अधिकारी एमए सिद्दीकी ने स्वच्छा सर्वेक्षण हेतु उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये।

नोडल अधिकारी नीतेश चौरसिया ने बताया कि होटल, मैरिज हाउस में कम्पोंटिंग पिट तथा कचरा प्रबंधन के लिए नगर पालिका से मार्गदर्शन दिया जाएगा। इस अवसर स्वच्छता निरीक्षक आरपी तिवारी ने कहा कि जो लोग होटल, मैरिज हाउस में स्टील के बर्तन और क्राकरी के स्थान पर प्लास्टिक डिस्पोजल का इस्तेमाल करेंगे। उनका लाइसेंस निरस्त किया जाएगा साथ ही 5 हजार रुपए तक का जुर्माना किया जाएगा। इस मौके पर बल्देव विश्वकर्मा एवं अन्य होटल, मैरिज हाउस संचालक एवं अन्य संस्थानों के प्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

दिव्यांग उपकरण एवं ई-स्कूटर वाहन क्रय करने पर मिलेगा अनुदान

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। श्रम पदाधिकारी ने जानकारी देकर बताया है कि सहायक सचिव मध्यप्रदेश भवन एवं अन्य संन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल भोपाल के पत्र दिनांक 19.06.2024 द्वारा प्रदेश के पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के लिए दो नवीन योजनाऐं लागू की गई हैं।

उन्होंने बताया कि भवन एवं अन्य सन्निर्माण दिव्यांग सहायता योजना 2024 में पंजीकृत हिताधिकारी निर्माण श्रमिक एवं उनके पंजीयन कार्ड में सम्मिलित आश्रित परिवार के सदस्य को मोटर चलित तिपहिया साईकल एवं अन्य सभी दिव्यांग उपकरण क्रय करने पर 100 प्रतिशत राशि (अधिकतम 35 हजार रूपये) मण्डल द्वारा अनुदान के रूप में प्रदाय की जायेगी। इसी प्रकार भवन एवं अन्य सन्निर्माण ई-स्कूटर हेतु अनुदान योजना 2024 में पंजीकृत हिताधिकारी निर्माण श्रमिक ई-स्कूटर वाहन क्रय किए गये वाहन का 50 प्रतिशत राशि (अधिकतम 40 हजार रूपये) मण्डल द्वारा अनुदान के रूप में प्रदाय की जायेगी। उपरोक्त योजनाएं पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के लिए लागू की गई है। योजना का राजपत्र में प्रकाशन राज्य शासन द्वारा 14 जून 2024 को प्रकाशित राजपत्र में हो चुका है, तथा उक्त योजनाएं पूरे मध्यप्रदेश राज्य में राजपत्र प्रकाशन दिनांक से लागू की जा चुकी है।

उन्होंने पात्र हितग्राहियों से अपील की है कि योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए अपने-अपने निकाय कार्यालय अथवा जिला श्रम कार्यालय से सम्पर्क कर प्राप्त किया जा सकेगा।

किसान भाई धान की नर्सरी डालने के पूर्व बीजों का शोधन अवश्य करें- उप संचालक कृषि

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। खरीफसीजन की प्रमुख फसलों में शामिल धान की नर्सरी डालने के पहले अगर सही तरीके से बीजों का शोधन कर लिया जायें, तो फसल रोपाई के बाद धान की फसल को रोग से बचाया जा सकता है।

तत्सम्बन्ध में उप संचालक कृषि सीधी द्वारा बताया गया कि धान की फसल को सबसे ज्यादा जिस रोग से नुकसान पहुंचता है, वह है कंडुआ रोग। अगर यह रोग फसल में लग जाए, तो धान की पूरी फसल को बर्बाद कर देता है, साथ ही अगल-बगल की फसल को भी अपनी चपेट में ले लेता है, इसलिए किसानों को धान की फसल को कंडुआ रोग से बचाने के लिए बीजों का शोधन जरूर करना चाहिए। धान की फसल में लगने वाला कंडुआ रोग फफूंद जनित है, जिससे 60 से 90 फीसदी तक फसल प्रभावित हो जाती है। यह सामान्यत: तापमान अधिक होने एवं हवा में आर्द्रता अधिक होने के चलते तेजी से फैलता है। धान में यूरिया का ज्यादा प्रयोग भी इस रोग को बढ़ाता है। यह रोग प्राथमिक तौर पर बीज से शुरू होता है, इसलिए बीज शोधन अत्यंत जरूरी है।

धान बीज शोधन के लिए 25 किलोग्राम बीज के लिए सबसे पहले 4 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन दवा को 40 से 45 लीटर पानी में घोल लेते हैं, फिर इसमें 16 से 18 घंटे तक धान बीज को भिगो कर निकालने के बाद छान कर छाया में सुखाते हैं, इस के बाद 60 ग्राम कार्वेन्डाजिम धान में मिला कर जूट की बोरियों को भिगो कर ढक देते हैं। 15 से 18 घंटे बाद जब बीज में सफेद अंकुरण दिखाई देने लगे, तो नर्सरी डालने के बाद रोग का खतरा कम हो जाता है।

इसके अलावा धान में जैव उर्वरकों एवं नैनो डीएपी का भी उपयोग करके फसल को रोग एवं कीटव्याधित से बचाया जा सकता है। जैविक उर्वरक के रूप में एजोस्प्रिलियम या एजेटोवेक्टर एवं पीएसबी जीवाणुओं की 5 किग्रा को 50 किग्रा. प्रति हेक्टेयर सूखी सड़ी हुई गोवर की खाद में मिलाकर खेत में मिला दे इसके पश्चात् धान के रोपित खेत में (20 दिन रोपाई उपरान्त) 15 किग्रा. प्रति हेक्टेयर नीलहरित काई का भुरकाव 3 से.मी. पानी की तह रखते हुये करें।

इसी प्रकार नैनो डीएपी तरल का बीजोपचार हेतु 5 मि.ली. प्रति किग्रा. की दर से करें एवं उपचारित बीजों को 20-30 मिनट तक छांव में सुखाने के उपरान्त ही बोवाई करें। उप संचालक कृषि द्वारा किसान भाइयों से अपील की गई है कि उपरोक्त सुझाव पर अमल करते हुये धान की फसलों को रोगो से बचायें।

रास्ता बंद हुआ तो धरने पर बैठे ग्रामीण

प्रशासन की समझाइश पर माने, रास्ता भी खुला

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के लवकुशनगर थाना अंतर्गत रविवार सुबह एक किसान ने गांव के लिए खेत से निकलने वाली रास्ता ट्रैक्टर जोत कर बंद कर दिया। जिससे गांव से मैन रोड के लिए आने जाने वाला रास्ता पूरी तरह से बंद हो गया। इस बात से नाराज ग्रामीणों ने एक साथ दोपहर में रोड पर बैठकर धरना शुरू कर दिया। जानकारी लगते ही तत्काल प्रशासन दलबल के साथ मौके पर पहुंचा। उन्होंने ग्रामीणों को समझाइश देकर रास्ता खुलवा कर धरना प्रदर्शन बंद करवाया।

जानकारी के अनुसार, ग्राम पंचायत बैरागिया पुखरी के मजरा जराबरा गांव के निवासी छोटेलाल पटेल ने गांव के पास मौजूद पैतृक 7 बीघा जमीन के सीमांकन के लिए लवकुशनगर तहसील में 18 जून को आवेदन दिया था। जिसके बाद पटवारी अयोध्या पटेल ने मौके पर जाकर जमीन का सीमांकन किया। जिसमें जमीन कम होने के कारण गांव के लिए जाने वाला रास्ता 7 बीघा जमीन में आ गया, रविवार की सुबह 2 बजे किसान छोटेलाल पटेल ने खेत जोत कर तरवारी से रास्ता बंद कर दिया।

जिससे गांव के लिए निकालने वाला रास्ता पूरी तरह से बंद हो गया। रास्ता बंद हो जाने पर ग्रामीण आक्रोशित हो गए और वे बीच रोड पर धरना प्रदर्शन देने लगे। इसके बाद थाना पुलिस को जानकारी लगी और पुलिस बल के साथ थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे। लेकिन उनकी समझाइश के बाद भी लोग नहीं माने, इसके बाद तहसीलदार शाम 4 बजे मौके पर पहुंचे, ग्रामीणों को समझाइश दी गई, तब जाकर ग्रामीणों ने धरना प्रदर्शन बंद किया।

भूमि स्वामी छोटेलाल पटेल ने बताया कि तहसील में आवेदन लगाकर मैंने पटवारी से अपनी पैतृक जमीन का सीमांकन करवाया है जिसमें मेरी जमीन कम पढ़ रही थी। इसलिए रास्ते को जोत कर बंद कर दिया गया था।

नायब तहसीलदार रामकुमार यादव ने बताया कि छोटेलाल पटेल ने आपसी विवाद के चलते रास्ता बंद कर दिया था। समझाइश के बाद रास्ता खोल दिया गया है। हिनौता थाना प्रभारी राजकुमार यादव ने बताया कि ग्राम पंचायत बैरागिया पुखरी के मजरा जराबरा गांव में किसान ने रास्ते को जोत कर गांव रास्ता बंद कर दिया था। जिसके बाद ग्रामीणों ने धरना प्रदर्शन चालू कर दिया था। दोनों पक्षों को समझाइश के बाद रास्ता खोल दिया गया है। मामला शांत हो गया है।

मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना का लाभ लेने ऑनलाइन करें आवेदन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र सीधी ने जानकारी देकर बताया है कि उद्योग संचालनालय म.प्र. भोपाल के पत्र 19.06.2024 के अनुसार मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजनांतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु सीधी जिले के लिए शासन द्वारा भौतिक लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। जिले के मान्य सभी बैंक शाखाओं को शाखावार मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना के लक्ष्य आवंटित कर दिए गए है। मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजनांतर्गत स्वयं का व्यवसाय/सेवा/उद्योग स्थापित करने वाले इच्छुक आवेदकों से एमपी ऑनलाइन के इसमस्तश् पोर्टल के माध्यम से ऋण आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं।

योजनांतर्गत 8 वीं कक्षा उत्तीर्ण, 18 वर्ष से 45 वर्ष की आयु वाले व्यक्ति व्यवसाय और सेवा क्षेत्र के लिए 50 हजार से 25 लाख रूपये तक तथा उद्योग (विनिर्माण) के लिए 50 हजार से 50 लाख रूपये तक की परियोजना लागत हेतु ऑनलाइन आवेदन समस्त पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

तीसरी मंजिल से गिरा युवक, मौत

निर्माणाधीन सीएम राइज स्कूल में कर रहा था मजदूरी, ठेकेदार ने नहीं दिए थे सुरक्षा उपकरण

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। अजयगढ़-छतरपुर बाइपास के पास निर्माणाधीन सीएम राइज स्कूल की बिल्डिंग से युवक की मौत हो गई। वह तीसरी मंजिल पर काम कर रहा था। इसी दौरान नीचे गिर गया। जिसे इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया। इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। मौत की खबर सुनते ही ठेकेदार जिला अस्पताल से भाग गया।

जानकारी के अनुसार नगर के पुराना पन्ना के आगे सीएम राइज स्कूल की बिल्डिंग का निर्माण कार्य चल रहा है। साथ ही नल फिटिंग का भी कार्य चल रहा है। जिसमें बी आर गोयल नाम की इंदौर की कंपनी, सपना ट्रेडर्स नाम की कंपनी मिलकर काम कर रही हैं।

जिसमें काम के लिए 100 से ज्यादा मजदूर लगाए गए थे। रविवार दोपहर बिल्डिंग की तीसरी मंजिल में स्वतंत्र पिता बृजलाल पटेल (21) निवासी हनुमतपुरा के साथ अन्य मजदूर भी काम कर रहे थे। इसी दौरान छड़ काटने के दौरान मजदूर को करंट का झटका लगा और वह तीन मंजिल से सीधे नीचे गिर गया। जिसे तुरंत जिला अस्पताल पन्ना में भर्ती करवाया गया। लेकिन इलाज के दौरान मजदूर की मौत हो गई।

पिता का इकलौता बेटा था- मृतक के पिता बृजलाल पटेल ने बताया कि एक भाई और एक बहिन सिर्फ दो संतान थी। बेटी की शादी हो चुकी है। घर की आर्थिक स्थिति सही नहीं से हम दोनों मजदूरी का काम कर घर चलाते थे। सीएम राइज की बिल्डिंग में करीब 5 महीने से काम कर रहे थे।

लेकिन इस दौरान कभी भी ठेकेदार की तरफ सुरक्षा के उपकरण नहीं दिए गए। न ही कोई सुरक्षा के इंतजाम किए। अगर बिल्डिंग निर्माण के सुरक्षा के इंतजाम होते तो आज यह हादसा नहीं होता। वहीं मृतक के परिजनों ने निर्माण कंपनी से परिजनों को मुआवजा राशि दिलाए जाने की मांग की है।

पीएम से की खराब सड़क की शिकायत, हो गई फेमस

लीला का वीडियो वायरल, कलेक्टर बोले-जल्द बनाएंगे रोड, पहले मजाक उड़ाते थे लोग

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। दो साल पहले शादी हुई, ससुराल की सड़क चलने लायक भी नहीं बात करते हुए लीला ने कहा- मेरी शादी 5 फरवरी 2022 को हुई थी। सीधी शहर से मेरा मायका गंजरी 30 किमी और ससुराल खड्डी खुर्द 40 किमी दूर है। शादी के बाद जब मैं ससुराल आई तो देखा कि यहां की सड़क चलने लायक भी नहीं है। मेरे मायके पक्ष के रिश्तेदार ससुराल आते थे तो मुझे बेइज्जती महसूस होती थी कि मैं इस गांव में रहती हूं, जहां सड़क में बड़े-बड़े गड्ढे हैं। मैं अपने पति से कहती थी कि सड़क को कैसे भी करके ठीक करवाएं।

जब मैंने दबाव बनाया तो पति ने गांव के लोगों को इकट्ठा किया। सभी लोगों ने सड़क बनाने को लेकर तत्कालीन सांसद (अब विधायक) रीति पाठक को आवेदन दिया। ग्राम पंचायत की तरफ से भी आवेदन दिया गया। गांव वाले कलेक्टर और तत्कालीन विधायक से भी मिले। आवेदन करते-करते डेढ़ साल बीत गए लेकिन कहीं से कोई जवाब ही नहीं मिला। न ही सड़क बनी।

पति के कहने पर बनाया वीडियो, वायरल होते ही कलेक्ट्रेट से कॉल आया- लीला कहती है कि शादी के 6 महीने बाद ही मैंने रील बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड करना शुरू कर दिया। इस काम में मेरे पति ने भी सपोर्ट किया। कुछ दिन पहले मैं और पति इसी रोड से गुजर रहे थे, तब मेरे पति ने कहा कि क्यों न रोड का वीडियो बनाकर अपलोड किया जाए। उसके बाद मैंने ये वीडियो बनाया। मेरे पति ने इसे सोशल मीडिया पर अपलोड किया। जैसे ही वीडियो अपलोड किया तो ये वायरल हो गया। वीडियो वायरल होने के दो दिन बाद कलेक्टर दफ्तर से फोन आया कि जल्द ही रोड बना दी जाएगी। वह कहती है कि जब तक सड़क का निर्माण हो नहीं जाता, हम आवाज उठाते रहेंगे।

लीला बोली- जब वीडियो बनाना शुरू किया, तब लोग ताना मारते थे- लीला ने कहा- जब मैंने वीडियो बनाना शुरू किया तो परिवार से पूरा सपोर्ट मिला, लेकिन गांव के लोगों ने बेहद बुरा बर्ताव किया। वो मुझे, मेरे पति और सास-ससुर को ताना मारते थे। भला बुरा कहते थे। मुझे गालियां तक दी हैं। सोशल मीडिया पर भी भद्दे कमेंट करते थे। वह कहती है कि मेरे ससुर सरकारी स्कूल में टीचर हैं। जब घर से किसी काम से निकलती थी तो लोग कहते थे देखो मास्टर की नचनिया बहू जा रही है। ये सुनकर मुझे तकलीफ होती थी लेकिन उन्हें ऐसा कहने से रोकने के लिए मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। मैंने अपना काम जारी रखा।

बीए फाइनल ईयर की पढ़ाई कर रही लीला, पति के पास बीसीए की डिग्री- लीला इस समय सीधी के टाटा कॉलेज में बीए फाइनल ईयर की पढ़ाई कर रही है। पति शिवेंद्र साहू के पास बैचलर ऑफ कंप्यूटर साइंस की डिग्री है। लीला कहती है कि पति को टेक्निकल नॉलेज है। मैं वीडियो में केवल एक्टिंग करती हूं, वीडियो शूट करने से लेकर एडिटिंग करने का काम पति ही करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वीडियो अपलोड करने का काम भी पति का ही है। लीला कहती है- एक साल तक हम लोगों ने वीडियो अपलोड किए, इससे हमारे फॉलोअर्स की संख्या भी बढ़ी। जब हमें कामयाबी मिली तो जो लोग भला-बुरा कहते थे, उनके मुंह बंद हो गए।

तीन ग्राम पंचायत और दो तहसील को कनेक्ट करती है सड़क- लीला ने जिस सड़क का वीडियो बनाया है, उस जगह पर पहुंचा। यहां से एक यात्री बस रोजाना गुजरती है। इस बस के ड्राइवर ने बताया कि वह कई सालों से बस चला रहा है, लेकिन रोड की हालत नहीं सुधरी।

इस रोड से गुजरने वाले लोग भी परेशान हैं। यात्रियों का कहना है कि शासन प्रशासन का रोड की तरफध्यान नहीं है। सीधी जिले में हर ग्राम पंचायत की रोड बनी है लेकिन इसे क्यों छोड़ दिया, समझ नहीं आता। वे कहते हैं कि रोड पर गड्ढे होने से दुर्घटना का खतरा बना रहता है। बारिश में गड्ढों में पानी भर जाता है, जिससे खतरा बढ़ जाता है। इस रोड से तीन ग्राम पंचायतें- गंजरी, सेंधवा और खड्डी खुर्द जुड़ी हैं। साथ ही रामपुर नैकिन और मझोली तहसील को ये रोड आपस में जोड़ती है।

तहसीलदार ने कहा- गांव तक प्रधानमंत्री सड़क, लीला टोला की बात कर रही- लीला का वीडियो वायरल होने के बाद कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने तो लीला को सड़क बनाने का भरोसा दिया लेकिन प्रशासन ने इस मसले पर बात नहीं की। भास्कर ने सीधी कलेक्टर से संपर्क करने की कोशिश की लेकिन उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

वहीं, तहसीलदार नितिन झोनाड़ का कहना है कि कलेक्टर के निर्देश पर वो मौके पर सड़क देखने गए थे। गांव तक प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत रोड बनी है। वीडियो में लड़की जिस सड़क की बात कर रही है, वहां सड़क नहीं है। वो एक टोला है, जहां चुनिंदा घर हैं। तहसीलदार ने कहा कि सीधी क्षेत्र के हर गांव तक सड़क बनी है। ऐसे टोले जहां 4-6 घर बने हैं, वहां हर जगह ऐसी ही स्थिति है। तहसीलदार ने ये भी कहा कि सड़क से कोई यात्री बस नहीं गुजरती।

अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोजगार योजना तथा टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना का मिलेगा लाभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विकास ने जानकारी देकर बताया है कि म.प्र. शासन जनजातीय कार्य विभाग द्वारा म.प्र. आदिवासी वित्त एवं विकास निगम के माध्यम से भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोजगार योजना, टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना के क्रियान्वयन के लिये प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई।

उन्होंने बताया कि भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोजगार योजना के लिए ऐसे अनु. जनजाति के सदस्य जिनकी उम्र 18 से 45 साल के मध्य हो, परिवार की वार्षिक आय 12 लाख रूपये से अधिक न हो तथा न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता आठवी उत्तीर्ण हो उन्हें इस योजना का लाभ प्राप्त होगा। इसी प्रकार टंट्या मामा अर्थिक कल्याण योजना के लिए ऐसे अनु. जनजाति के सदस्य जो आयकर दाता न हो, जिनकी उम्र 18 से 55 साल के मध्य हो उन्हे सभी प्रकार के स्वरोजगार गतिविधियो हेतु राशि रूपये 10 हजार से 1 लाख तक की परियोजनाओ के लिये बैंको के माध्यम से ऋण स्वीकृत किया जायेगा।

विचार

वायु प्रदूषण के कारण पृथ्वी से खत्म हो जाएंगे कीट पतंगे

अध्ययन के मुताबिक 1990 के बाद से कीट पतंगों की आबादी में करीब 25 फीसदी की कमी आई है, अनुमान है कि यह कीट हर दशक में करीब 9 फीसदी की दर से कम हो रहे हैं। शोधकर्त्ताओं के अनुसार प्रदूषण कीटों के एंटीना को प्रभावित करता है और मस्तिष्क को भेजे जाने वाले गंध संबंधी विद्युत संकेतों की शक्ति को कम कर देता है। कीटों की एंटीना में गंध को पकडने वाले रिसैप्टर्स होते हैं, जो आहार, स्त्रोत, संभावित साथी और अंडे देने के लिए एक अच्छी जगह खोजने में मदद करते हैं। ऐसे में यदि किसी कीट के एंटीना पर्टिकुलेट मैटर से ढके होते हैं तो उससे एक भौतिक अवरोध उत्पन्न हो जाता है। यह गंध को पकडने वाले रिसैप्टर्स और हवा में मौजूद गंध के अणुओं के बीच होने वाले संपर्क को रोकता है। एंटीना पर प्रदूषक तत्वों के जमने के कारण कीटों का सूचनातंत्र काम करना बंद कर देता है। आपस में संदेशों का आदान-प्रदान नहीं कर पाते। भोजन, अपने साथी को खोजना या अपने ठिकानों को तलाश करने की उनकी शक्ति क्षीण हो जाती है। उनके एंटीना काम करना बंद कर देते हैं और कीट एक जिंदा लाश बन जाता है। जो समय से पहले मर जाता है। कीटों की सिग्नलिंग प्रणाली डिस्टर्ब हो जाती है। वायु प्रदूषण केवल इंसान को प्रभावित कर रहा है ऐसा नहीं है। जहरीली गैसों का बुरा असर पूरी जैवविविधिता के खात्मे पर तुला है। इस कड़ी में वो सूक्ष्म कीट भी शामिल हैं जो हमें अक्सर हवा में उड़ते दिखते हैं। ये सूक्ष्म कीट कचरे का विघटन, मानव जीवन, फसलीय चक्रीकरण के लिए बेहद जरूरी हैं। इनकी अहमियत मानव जीवन में प्रत्यक्ष तौर पर नजर नहीं आती। लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से ये कीट इंसान को हर स्तर पर प्रभावित करते हैं। लेकिन वायुमंडल में चढ़ती प्रदूषण की मोटी परत ने इन कीटों की जिंदगी डिस्टर्ब कर दी है। कीटों के भोजन तलाशने से लेकर साथी से मिलन, संतति निर्माण और विकास की प्रक्रिया प्रदूषण के कारण नष्ट हो चुकी है। कीटों के सूचनातंत्र को धुएं और गैसों ने डिस्टर्ब कर उन्हें रास्ते से भटका दिया है। हालिया शोधों के मुताबिक कीटों की घटती आबादी के लिए प्रदूषण के साथ शहरीकरण, कृषि क्षेत्र में बढ़ता कीटनाशकों का उपयोग और जलवायु परिवर्तन जैसी वजह जिम्मेदार हैं। प्रदूषण न केवल शहरों के आस-पास बल्कि दूर-दराज ग्रामीण क्षेत्रों में भी इनकी आबादी को प्रभावित कर रहा है। शोध से पता चला कि प्रदूषण के चलते आने वाले कुछ दशकों में दुनिया के 40 फीसदी कीट खत्म हो जाएंगे। धुआं, धूल, धुंध, पी.एम. के कण कीटों के एंटीना और रिसैप्टर्स पर बहुत बुरा असर डाल रहे हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबोर्न, बीजिंग वानिकी विश्वविद्यालय और कैलिफोर्निया के शोधकर्त्ताओं के अध्ययन में कीटों पर प्रदूषण का असर अनुमान से कहीं ज्यादा निकला है। वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) द्वारा तय मानक के अनुसार वार्षिक औसत से ज्यादा हैं। खेतों, बगीचों में उड़ते कीटों का मुख्य काम परागण होता है।

पुलों का ढहना शासन-तंत्र की भ्रष्टता का प्रमाण

ललित गर्ग

बिहार में एक पखवाड़े के भीतर लगभग एक दर्जन छोटे-बड़े पुलों के ध्वस्त होने की घटनाएं हैरान करने के साथ-साथ चिंतित करने वाली हैं। जैसी खबरें हैं, अकेले बुधवार, यानी 3 जुलाई को ही राज्य के विभिन्न हिस्सों में पांच पुल-पुलिया धराशायी हो गए। इनमें सिवान में छाड़ी नदी पर बने दो पुल शामिल हैं। इससे पहले दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर टर्मिनल-1 पर छत गिरने की घटना से भी हर कोई हैरान है। इस हादसे के कारण अनेक वाहन क्षतिग्रस्त हुए एवं एक व्यक्ति की मौत हो गई और 8 लोग घायल हुए थे। सभी को इस बात की हैरानी हो रही है कि देश के सबसे प्रमुख हवाईअड्डे पर इस तरह का हादसा कैसे हो सकता है? मुंबई में भी घाटकोपर का होर्डिंग गिरना 14 लोगों की मौत का कारण बना था।

इन पुलों के गिरने एवं अन्य सरकारी निर्माणों के ध्वस्त होने की घटनाओं ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, नैतिकता, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। आज हमारी व्यवस्था चाहे राजनीति की हो, सामाजिक हो, पारिवारिक हो, धार्मिक हो, औद्योगिक हो, शैक्षणिक हो, चरमरा गई है, दोषग्रस्त हो गई है। उसमें दुराग्रही इतना तेज चलते हैं कि ईमानदारी बहुत पीछे रह जाती है। जो सद्प्रयास किए जा रहे हैं, वे निष्फल हो रहे हैं। पुल के गिरने से जितने पैसों की बर्बादी हुई, उसकी भरपाई आखिर किससे कराई जाएगी? बिहार में पुल गिरने की ताजा घटनाएं कोई पहली नहीं है। इससे पहले पिछले साल भर में सात पुलों के ढह जाने की खबरें आई थी। जाहिर है, इन पुलों के ढहने एवं गिरने से कई गांवों का आपस में सीधा संपर्क टूट गया है और मानसून के मौसम में उनकी परेशानियां बढ़ गई हैं। बरसात के मौसम में जर्जर ढांचों के गिरने की घटनाएं ज्यादा घटती हैं और इसीलिए सभी राज्यों में स्थानीय प्रशासन मानसून आने से पहले ही उनकी पहचान कर उनका इस्तेमाल प्रतिबंधित कर देता है। मगर पुल कोई रिहाइशी इमारत नहीं, जिसमें चंद परिवार या कुछ लोग रहते हों, और जिसे एहतियातन खाली करा लिया जाए। ये पुल ग्रामीण लोगों के जीवन की अनिवार्यता एवं जीवनरेखाएं हैं। उच्च तकनीक और प्रौद्योगिकी के मौजूदा समय में उच्च लागत के बावजूद छोटी नदियों और नहरों पर बनने वाले पुल भी यदि चंद वर्षों में या बनते ही धराशायी हो जाएं, तो इसको कुदरती कहर का नतीजा नहीं, आपराधिक मानवीय लापरवाही, भ्रष्टाचार एवं सरकारी धन का दुरुपयोग ही मानना चाहिए। बिहार में सिवान की जिस नदी पर दो पुलों के ढहने की घटना घटी है, वह मृत हो चुकी थी और उसे जल-जीवन हरियाली अभियान के तहत पुनर्जीवित किया गया था। निस्संदेह, इसके लिए राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन सराहना के पात्र हैं। आखिर इस नदी के जिंदा होने से हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई को बल मिला है। मगर क्या उसी तंत्र को यह भी नहीं सुनिश्चित करना चाहिए था कि जो पुल जर्जर अवस्था में हैं, उनका विकल्प भी साथ-साथ तैयार किया जाए? इस तरह बार-बार पुलों का गिरना एवं ध्वस्त होना सरकार में गहरे पैठ चुके भ्रष्टाचार, लापरवाही एवं रिश्वतखोरी को उजागर करता है। आजादी के अमृत-काल में पहुंचने के बाद भी भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी हमारी व्यवस्था में तीव्रता से व्याप्त है, अनेक हादसों एवं जानमाल की हानि के बावजूद भ्रष्ट हो चुकी मोटी चमड़ी पर कोई असर नहीं होता। ये पुल हादसें एवं ध्वस्त होने की घटनाएं बिहार में सरकारी भ्रष्टाचार के चरम पर होने को ही बल देती है। ऐसा नहीं है कि बिहार में ही ऐसे हादसें हो रहे हैं। गुजरात के मोरबी पुल हादसे को लोग अब भी नहीं भूले हैं। इस हादसे में 135 लोगों की मौत हो गई थी। सात साल पहले कोलकाता में विवेकानंद पुल के ढहने से 26 लोगों की मौत की घटना भी सबको याद होगी। सिर्फ बिहार में पुलों का यूं ढहते जाना ही चिंता की बात नहीं है, दूसरे तमाम राज्यों से भी चमचम सड़कों पर बनते गड्ढ़ों और नए निर्माण के दरकने की खबरें लगभग रोजाना सुर्खियां बटोर रही हैं। इसलिए बेहतर होगा कि तमाम सार्वजनिक निर्माण में पारदर्शिता, ईमानदारी एवं आधुनिक स्थापित मानकों की गारंटी सुनिश्चित की जाए और इसमें किसी किस्म की कोताही बरतने वाले की जिम्मेदारी तय हो। देश भर में तमाम पुराने पुलों की समीक्षा के साथ-साथ उनके रखरखाव या वैकल्पिक पुल के निर्माण को लेकर ठोस कदम उठाए जाने चाहिए। इतना तय है कि ये सभी पुल अगर भरभरा कर गिर रहे हैं तो इनकी डिजाइन गलत होने से लेकर उसमें उपयोग होने वाली सामग्री के घटिया होने का भी साफ संकेत है। लेकिन जिस तरह सरकार इन एवं ऐसे पुलों की गुणवत्ता और जोखिम का अध्ययन करा रही थी, क्या उसके निर्माण के दौरान या उससे पहले डिजाइन सहित उसके हर कसौटी पर बेहतर होने के लिए जांच कराना सुनिश्चित नहीं कर सकती थी? यह तय है कि इन पुलों के निर्माण में व्यापक खामियां थीं और वे भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गये। सवाल है कि जब सरकार किसी कंपनी को पुल निर्माण की जिम्मेदारी सौंपती हैं, उससे पहले क्या गुणवत्ता की कसौटी पर पूरी निर्माण योजना, डिजाइन, प्रक्रिया, सामग्री, समय-सीमा और संपूर्णता को सुनिश्चित किया जाना जरूरी समझा जाता? देश में भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है, विशेषत: राजनीतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने देश के विकास को अवरूद्ध कर रखा है। यही कारण है कि पुल या दूसरे निर्माण-कार्यों के लिए रखे गए बजट का बड़ा हिस्सा कमीशन-रिश्वतखोरी की भेंट चढ़ जाता है। इसका सीधा असर निर्माण की गुणवत्ता पर पड़ता है। निर्माण घटिया होगा तो फिर उसके धराशायी होने की आशंका भी बनी रहती है। हादसों का एक बड़ा कारण जांच में दोषी और जिम्मेदार ठहराए गए अधिकारियों एवं ठेकेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का न होना भी है। बिहार, दिल्ली, मुम्बई, गुजरात हादसों के दोषियों को बचाने के प्रयास भी सबके सामने हुए हैं। हर हादसे के बाद लीपापोती के प्रयास खूब होते हैं। हादसे में मरने वालों के परिजनों को मुआवजा बांटकर ही अपनी जिम्मेदारी पूरी समझने वाली सरकारों को इससे आगे बढ़ना होगा। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर निगरानी रखने की पारदर्शी नीति नियामक केन्द्र बनाने के साथ उस पर अमल भी जरूरी है। विकसित देशों में भी ऐसे हादसे होते हैं, लेकिन अंतर यह है कि भारत में ऐसे हादसों से सबक नहीं लिया जाता। यह प्रवृत्ति दुर्भाग्यपूर्ण है। विडम्बना देखिये कि ऐसे भ्रष्ट शिखरों को बचाने के लिये सरकार कितने सारे झूठ का सहारा लेती है। हादसों की जांच से काम नहीं चलने वाला। ऐसे निर्माण कार्यों में कमीशन-रिश्वतखोरी रोकने पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि जब ठेकेदार एक बड़ी राशि कमीशन के तौर पर दे देता है, तो फिर वह निर्माण कार्य में भी गुणवत्ता बनाए रखने के प्रति लापरवाह हो जाता है। लापरवाही की परिणति ऐसे हादसों के रूप में सामने आती है।

प्रगतिशील कदम उठाने वाले नेतृत्व ने अगर भ्रष्ट व्यवस्था सुधारने में मुक्त मन से सहयोग नहीं दिया तो कहीं हम अपने स्वार्थी उन्माद एवं भ्रष्टता में कोई ऐसा धागा नहीं खींच बैठें, जिससे पूरा कपड़ा ही उधड़ जाए। राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार के मामले में एक-दूसरे के पैरों के नीचे से फट्टा खींचने का अभिनय तो सभी दल एवं नेता करते हैं पर खींचता कोई भी नहीं। रणनीति में सभी अपने को चाणक्य बताने का प्रयास करते हैं पर चन्द्रगुप्त किसी के पास नहीं है। घोटालों और भ्रष्टाचार के लिए हल्ला उनके लिए राजनैतिक मुद्दा होता है, कोई नैतिक आग्रह नहीं। कारण अपने गिरेबार में तो सभी झांकते हैं वहां सभी को अपनी कमीज दागी नजर आती है, फिर भला भ्रष्टाचार से कौन निजात दिरायेगा? ऐसी व्यवस्था कब कायम होगी कि जिसे कोई रिश्वत छू नहीं सके, जिसको कोई सिफारिश प्रभावित नहीं कर सके और जिसकी कोई कीमत नहीं लगा सके। ईमानदारी अभिनय करके नहीं बताई जा सकती, उसे जीना पड़ता है कथनी और करनी की समानता के स्तर तक। आवश्यकता है, राजनीति के क्षेत्र में जब हम जन मुखातिब हों तो प्रामाणिकता का बिल्ला हमारे सीने पर हो। उसे घर पर रखकर न आएं। राजनीति के क्षेत्र में हमारा कुर्ता कबीर की चादर हो। तभी इन भ्रष्ट पुलों का भर-भराकर गिरना बन्द होगा।

आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार क्यों आवश्यक

-डा. वरिन्द्र भाटिया

1 जुलाई से देश में लागू हो चुके 3 नए आपराधिक कानून चर्चा का केन्द्र बिन्दू हैं। तीन नए आपराधिक कानून-भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 25 दिसंबर 2023 को अधिसूचित किए गए थे। इन कानूनों को भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम की जगह लाया गया है। कहा जा रहा है कि इससे भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में व्यापक बदलाव आएंगे। इसके लागू हो जाने से 'जीरो एफ.आई.आर.', पुलिस में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराना, 'एस.एम.एस.' (मोबाइल फोन पर संदेश) के जरिए सम्मन भेजने जैसे इलैक्ट्रॉनिक माध्यम के तहत लोगों को सहूलियत दी गई है। सभी जघन्य अपराधों के वारदात स्थल की वीडियोग्राफी जरूरी जैसे प्रावधान नए कानून में शामिल हैं। नए कानूनों के तहत आपराधिक मामलों में फैसला मुकद्दमा पूरा होने के 45 दिन के अंदर आएगा। पहली सुनवाई के 60 दिन के भीतर आरोप तय कर दिए जाएंगे। दुष्कर्म पीड़िताओं का बयान कोई महिला पुलिस अधिकारी ही लेगी, साथ ही उसके अभिभावक या रिश्तेदार की मौजूदगी में बयान दर्ज किया जाएगा। मैडीकल रिपोर्ट 7 दिन के अंदर देनी होगी। नए कानूनों में संगठित अपराधों और आतंकवाद के कृत्यों को परिभाषित किया गया है। राजद्रोह की जगह देशद्रोह लाया गया है। सभी तलाशी तथा जब्ती की कार्रवाई की वीडियोग्राफी होगी जो जरूरी है। महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों पर एक नया अध्याय जोड़ा गया है। किसी बच्चे को खरीदना और बेचना जघन्य अपराध की श्रेणी में आएगा। किसी नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के लिए मृत्युदंड या उम्रकैद का प्रावधान नए कानून में जोड़ा गया है। नए कानूनों के तहत अब कोई भी व्यक्ति पुलिस थाना गए बिना इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यम से घटना की रिपोर्ट दर्ज कराने में सक्षम है। इससे मामला दर्ज कराना आसान और तेज हो जाएगा। पुलिस द्वारा फौरी कार्रवाई की जा सकेगी। 'जीरो एफ.आई.आर.' से अब कोई भी व्यक्ति किसी भी पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज करा सकता है, भले ही अपराध उसके अधिकार क्षेत्र में न हुआ हो। नए कानून में गिरफ्तारी की सूरत में व्यक्ति को अपनी पसंद के किसी व्यक्ति को अपनी स्थिति के बारे में सूचित करने का अधिकार दिया गया है। इससे गिरफ्तार व्यक्ति को तुरंत सहयोग प्राप्त होगा। नए कानूनों में महिलाओं व बच्चों के खिलाफ अपराधों की जांच को प्राथमिकता दी गई है। इससे मामला दर्ज किए जाने के 2 महीने के अंदर जांच पूरी की जाएगी। नए कानूनों के तहत पीड़ितों को 90 दिन के भीतर अपने मामले की प्रगति पर नियमित रूप से जानकारी पाने का अधिकार होगा। नए कानूनों में, महिलाओं व बच्चों के साथ होने वाले अपराध पीड़ितों को सभी अस्पतालों में निःशुल्क प्राथमिक उपचार या इलाज मुहैया कराया जाएगा। आरोपी तथा पीड़ित दोनों को अब प्राथमिकी, पुलिस रिपोर्ट, आरोपपत्र, बयान, स्वीकारोक्ति और अन्य दस्तावेज 14 दिन के भीतर पाने का अधिकार होगा। अदालतें वक्त

रहते न्याय देने के लिए मामले की सुनवाई में अनावश्यक विलंब से बचने के वास्ते अधिकतम 2 बार मुकद्दमे की सुनवाई स्थगित कर सकती हैं। नए कानूनों में सभी राज्य सरकारों के लिए गवाह सुरक्षा योजना लागू करना जरूरी है। अपराध प्रक्रिया संहिता की जगह लाए जा रहे भारतीय नागरिक सुरक्षा कानून में गिरफ्तारी या अदालत में पेश करते समय कैदी को हथकड़ी लगाने का प्रावधान किया गया है। इस नियम के मुताबिक अगर कोई कैदी आदतन अपराधी है या पहले हिरासत से भाग चुका है या आतंकी गतिविधियों में शामिल रहा है, ड्रग्स से जुड़ा अपराधी हो, हत्या, रेप, एसिड अटैक, मानव तस्करी, बच्चों का यौन शोषण में शामिल रहा हो तो ऐसे कैदी को हथकड़ी लगाकर गिरफ्तार किया जा सकता है। अब तक के आपराधिक कानून में हथकड़ी लगाने पर उसका कारण बताना जरूरी था। इसके लिए मैजिस्ट्रेट से इजाजत भी लेनी होती थी। साल 1980 में प्रेम शंकर शुक्ला बनाम दिल्ली सरकार के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने हथकड़ी के इस्तेमाल को अनुच्छेद 21 के तहत असंवैधानिक करार दिया था। कोर्ट ने कहा था कि अगर हथकड़ी लगाने की जरूरत है तो मैजिस्ट्रेट से इसकी इजाजत लेनी होगी। आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार, न्यायिक प्रणाली में (विशेष रूप से जिला एवं अधीनस्थ न्यायालयों में) लगभग 3.5 करोड़ मामले लंबित हैं, और अब यह आंकड़ा बहुत अधिक हो चुका है। अंडरट्रायल मामलों में भारत, दुनिया के सबसे अधिक अंडरट्रायल कैदियों की संख्या वाला देश है। एन.सी.आर.बी.-प्रिजन स्टैटिस्टिक्स इंडिया के एक पुराने अनुमान के अनुसार, जेलों में बंद कुल जनसंख्या का 67.2 प्रतिशत अंडरट्रायल कैदी हैं। अब इस संख्या में भी अच्छी-खासी वृद्धि हो चुकी है। ऐसे अनेक कारणों से आपराधिक कानूनों में न्यायिक सुधार देश हित में है।एक बात तो तय है कि नए कानूनों से एक आधुनिक न्याय प्रणाली स्थापित होगी। इसका उद्देश्य आपराधिक न्याय प्रणाली के सभी केन्द्रों के बीच आसानी से सूचना का आदान-प्रदान सुनिश्चित कर एक ताकतवर और प्रभावी आपराधिक न्याय प्रणाली स्थापित करना है। विदित हो कि देश के बहुमुखी विकास के लिए आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार अति आवश्यक है, जिसकी एक लंबे समय से अनदेखी की जा रही थी। क्या ऐसा लगता है कि आपराधिक न्याय प्रणाली में वर्तमान सुधार से अपराधों पर अंकुश लगाने के साथ-साथ देश के नागरिकों में सुरक्षा की भावना भी मजबूत होगी?

स्कूलों के कमरों में खोले कॉलेज : न लैब-लाइब्रेरी, न शिक्षक

43 महाविद्यालयों में 495 पद, भर्ती सिर्फ एक, चुनाव से पहले बिना सर्वे-तैयारी के खुले

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार ने चुनाव से पहले 43 नए कॉलेज खोलने का ऐलान किया। एडमिशन भी शुरू कर दिया, लेकिन इन कॉलेजों में न शिक्षक हैं, न लैब और न लाइब्रेरी। खास बात यह है कि इन कॉलेजों को स्कूलों में ही 2-4 कमरों में खोला गया है।

इन कॉलेज में प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर के 495 पद स्वीकृत हैं। बावजूद इसके एकमात्र असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति की गई। एडमिशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। अब उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के दूसरे कॉलेजों में पदस्थ शिक्षकों से इन कॉलेजों में पोस्टिंग का आवेदन मंगाया है। इस सत्र से यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की जा चुकी है।

बिलासपुर में असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्तिः 40 कॉलेजों को 12-12 असिस्टेंट प्रोफेसर का सेटअप दिया गया था। 3 कॉलेजों में 5-5 का सेटअप है। इसके बावजूद एक भी असिस्टेंट प्रोफेसर की पोस्टिंग नहीं की गई। बिलासपुर के स्वामी आत्मानंद कॉलेज में ही एकमात्र असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति हुई।

बिना सर्वे और तैयारी के कॉलेज खोलने का किया ऐलानः जांच पड़ताल में मिला कि, जहां कॉलेज खोले गए, वहां बिना किसी सर्वे या तैयारी के ऐलान कर दिया। स्कूल के दो-चार कमरों को कॉलेज के लिए दे दिया गया। दूसरे कॉलेज के प्राचार्य को प्रभारी बना दिया गया। बीए, बीएससी, बीकॉम, पीजीडीए जैसे विषय भी खोल दिए, पर कोई सुविधा नहीं दी गई।

प्रभारी होने के कारण प्राचार्य महीने में एक-दो बार ही कॉलेज जाते हैं। लैब-लाइब्रेरी भी नहीं है। इन सबका खमियाजा छात्रों को भुगतना पड़ रहा है।

प्रोफेसर के 682, असिस्टेंट प्रो. के 2169 पद खालीः प्रदेश में प्रोफेसर के 682 पद स्वीकृत। इनमें से अधिकांश पद खाली हैं। बिलासपुर जिले के 17 कॉलेजों में प्रोफेसर के 48 पद स्वीकृत हैं। सभी पद खाली हैं। इसी तरह प्रदेश में असिस्टेंट प्रोफेसर के 5315 पद स्वीकृत हैं। इनमें 3146 कार्यरत हैं और 2169 पद खाली हैं। प्रदेश के 226 यूजी कॉलेजों में 23 रेगुलर प्रिंसिपल हैं। 203 पीजी कॉलेज में 59 नियमित प्रिंसिपल हैं।

आवेदन मंगाया गया जिन कॉलेजों में नियमित शिक्षक नहीं

उच्च शिक्षा विभाग के अपर संचालक डॉ. एचपी खैरवार ने कहा कि आवेदन मंगाया गया जिन कॉलेजों में नियमित शिक्षक नहीं हैं, वहां नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू हो गई है। प्रदेशभर के शिक्षकों से जो उन कॉलेजों में जाना चाहते हैं, आवेदन मंगाए गए हैं।

एक्सपर्ट्स व्यूः सरगुजा यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. रोहिणी प्रसाद ने कहा कि ??किसी भी कॉलेज की घोषणा करने से पहले वहां सर्वे होना चाहिए, ताकि पता चले सके कि उच्च शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों की संख्या कितनी है।

इसके बाद अधोसंरचना और मानव संसाधन पर कार्य होना चाहिए। अगर ऐसे ही कॉलेज खोले गए तो शासन के पैसे का दुरुपयोग है। नई सरकार ऐसे कॉलेजों में अतिथि शिक्षकों की भर्ती का आदेश दे रही है। उनका वेतन भी बढ़ाया गया है। एनईपी से छात्रों को मिलेगा।

फैक्ट्री में हैवी सामान गिरने से मजदूर की मौत

आयरन स्टील प्रोसेसिंग कंपनी में हादसा, 50 लाख रुपए मुआवजे की मांग

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। दुर्ग जिले के भिलाई के हथखोज इंडस्ट्रियल एरिया में स्थित आयरन स्टील प्रोसेसिंग कंपनी में हादसा हुआ है। हैवी सामान ऊपर गिरने से एक मजदूर की मौत हो गई। घटना पुरानी भिलाई थाना क्षेत्र की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

थाना प्रभारी महेश ध्रुव ने बताया कि, रविंद्र वर्मा हथखोज में भिलाई आयरन स्टील प्रोसेसिंग कंपनी में काम करता था। रविवार दोपहर काम करने के दौरान वो उस तरफ बाथरूम करने चला गया, जहां हैवी लिफ्टिंग का काम चल रहा था। जब रविंद्र बाथरूम कर लौटा, तो मना करने के बावजूद उसी तरफ चला गया।

हादसे के बाद परिजनों ने किया हंगामाः इसी दौरान अचानक पैर फिसलकर गिरा, तो काफी वजनी चक्कानुमा पार्ट उसके ऊपर गिर गया। जिससे मजदूर का सिर फट गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद परिजनों ने जमकर हंगामा किया। पुरानी भिलाई पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

परिजनों ने की 50 लाख रुपए मुआवजे की मांगः परिजनों ने फैक्ट्री प्रबंधन से मांग की है कि मृतक के परिवार को 50 लाख रुपए मुआवजा दिया जाए। इधर, कंपनी संचालक धारिया जाम का कहना है कि वो मृतक के दोनों बच्चों की पढ़ाई और स्वास्थ्य का खर्च उठा लेंगे। उसकी पत्नी को नौकरी दे देंगे। दोनों बच्चों के नाम 3-3 लाख रुपए की एफडी कर देंगे। इसके अलावा उन्हें इंश्योरेंस से जो मिल पाएगा वो मिलेगा। इसके बाद भी पीड़ित परिवार 50 लाख रुपए मुआवजा को लेकर अड़ा हुआ है।

बेबीलोन होटल में बीजेपी नेता की भतीजी की लाश

रेलवे ट्रैक पर ब्वॉयफ्रेंड का मिला सिर कटा शव

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर के जेल रोड स्थित बेबीलोन होटल के कमरे में रविवार को 25-26 साल की लड़की की लाश मिली है। आशंका है कि लड़की की हत्या की गई है। उसकी पहचान अंबिकापुर निवासी वाणी गोयल के रूप में हुई है। वह सूरजपुर के भाजपा जिलाध्यक्ष बाबूलाल गोयल की भतीजी थी।

वहीं दूसरी ओर जीआरपी को सुबह करीब 6 बजे टै कॉलोनी के पास एक युवक का भी पटरी पर शव मिला है। युवक का सिर धड़ से अलग है। उसकी पहचान अंबिकापुर निवासी विशाल कुमार गर्ग के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि विशाल और वाणी का आपस में प्रेम संबंध था।

वाणी की दर्ज कराई गई थी गुमशुदगीः वाणी का परिवार अंबिकापुर में रहता है। उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट परिजनों ने दर्ज कराई थी। इसके बाद से पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। लोकेशन ट्रेस कर पुलिस रविवार को होटल पहुंची तो चौथी मंजिल पर स्थित कमरा नंबर 416 में उसकी लाश मिली। सूचना मिलने पर रायपुर की गंज थाना पुलिस भी मौके पर है।

बताया जा रहा है कि वाणी ने रायपुर स्थित एक प्राइवेट यूनिवर्सिटी से 2016 से 2019 तक ग्रेजुएशन किया। इसके बाद 2022 में नागपुर के निराली कुकरी इंस्टीट्यूट से बेकरी का कोर्स किया था। अभी वह अपनी प्रोफाइल में पेस्ट्री शेफलिखती थी।

युवक का शव अर्धनग्न हालत में थाः युवक के पास से एक मोबाइल फोन, पर्स में कुछ पुराने बिल और करीब 1500 रुपए मिले हैं। युवक की लास्ट अर्धनग्न अवस्था पर मिली है। उसके शरीर के ऊपरी हिस्से में कपड़े नही थे। फिलहाल जीआरपी से गंज थाना की पुलिस ने संपर्क किया है। बताया जा रहा है कि मरने वाले दोनों लोग एक-दूसरे को जानते थे। हालांकि विशाल सामान्य फैमिली से है।

हत्या और आत्महत्या में उलझी गुत्थीः वारदात को लेकर फिलहाल पुलिस के सामने दो थ्योरी है। पुलिस का कहना है कि, अगर युवक-युवती दोनों प्रेमी-प्रेमिका थे, तो उनके बीच क्या विवाद हुआ, जिसके बाद यह घटना हुई। इसे लेकर मामला फिलहाल हत्या और आत्महत्या के बीच उलझा हुआ है।

पहली थ्योरी के मुताबिक रू दोनों के बीच होटल के कमरे में किसी बात पर विवाद हुआ होगा। इसके बाद युवक ने युवती की कमरे में हत्या कर दी। फिर पकड़े जाने के डर से खुद जाकर ट्रेन के सामने कूद कर जान दे दी।

दूसरी थ्योरी के मुताबिक रू दोनों के बीच विवाद के बाद युवक ने ट्रेन के सामने कूद कर अपनी जान दे दी। संभावना है कि मरने के दौरान युवक-युवती से कॉल पर बात कर रहा होगा। जिससे युवती को उसके मरने का पता चलते ही उसने भी होटल के कमरे में सुसाइड कर लिया होगा।

पोस्टमॉर्टम और कॉल डिटेल से होगा खुलासाः फिलहाल पुलिस इन सभी एंगलों पर जांच कर रही है। दोनों के कॉल डिटेल भी खंगाली जा रही है। फिलहाल दोनों के शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया गया है। इससे यह साफ हो सके की असल में युवती के मौत की वजह क्या है। दोनों में क्या संबंध थे। दोनों के बीच विवाद किस वजह से हुआ होगा।

धारदार हथियार से बछड़े की हत्या, आरोपी को जेल

मीडिया ऑडीटर, सक्ती एजेंसी। छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले में बछड़े की हत्या करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बताया जा रहा है कि मवेशी आरोपी के घर के सामने चारा खा रही थी, तभी युवक ने गाय के बछड़े को घर के अंदर ले जाकर धारदार हथियार से उसकी हत्या कर दी।

आरोपी के कब्जे से गौवंश के शरीर के टुकड़े मिले हैं। आरोपी के खिलाफ कृषिक पशु परिरक्षण अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई है। मामला बाराद्वार थाना क्षेत्र का है।

चारा खा रहे गौवंश की हत्याः जानकारी के मुताबिक, वार्ड नं 6 निवासी दीपक ठाकुर (37 वर्ष) ने थाना में रिपोर्ट दर्ज कराया कि ग्राम डूमरपारा निवासी बुधेश उर्फ शेर सिंह ने अपने घर के सामने चारा खा रहे गौवंश को पकड़ लिया। उसके बाद घर के अंदर ले जाकर लोहे के कत्ता से काटकर उसकी हत्या कर दी।

जंगल में बन रही थी अवैध-शराब, आबकारी ने मारा छापा

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला मुख्यालय के रेगड़ा गांव के जंगल में नाला किनारे अवैध महुआ शराब बनाया जा रहा था। शराब तस्कर कई बर्तनों में शराब को चूल्हा भट्टी पर चढ़ा रखे थे, तभी आबकारी कर्मी वहां पहुंच गए और करीब 200 लीटर अवैध महुआ शराब को पकड़ा।

शराब तस्कर आबकारी कर्मचारियों को देख जंगल के रास्ते भाग गए। यहां जांच में विभागीय कर्मचारियों द्वारा 205 लीटर महुआ शराब जब्त किया गया। बताया जा रहा है कि अवैध शराब व जब्त महुआ लाहान की कीमत करीब अस्सी हजार रूपए होगी। मामले में आबकारी विभाग ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।

गड्ढे में दबा रखे थे महुआ लहानः शराब तस्कर भारी मात्रा में शराब बनाने की तैयारी कर रहे थे। 200 लीटर महुआ शराब बनाई जा रही थी। इसके लिए नाला किनारे जंगल में गड्ढे कर 38 बोरियों में 760 किलो महुआ लहान दबा रखे थे। आबकारी की टीम ने जमीन खोदकर सभी बोरियों और लहान को जब्त कर लिया है।

ट्यूब में भरी थी 70 लीटर महुआ शराबः जब आबकारी अमले ने मौके पर दबिश दी तो सात प्लास्टिक जरी के डिब्बों में 35 लीटर महुआ शराब मिली। साथ ही दो ट्यूबनुमा ब्लैडर में 50-50 लीटर और एक ब्लैडर में 70 लीटर महुआ शराब भरी हुई थी, जिसे भी जब्त कर लिया गया। इनकी कीमत करीब 41 हजार रुपए बताई जा रही है।

पहले भी पकड़ाया अवैध शराबः शहर से करीब पांच से सात किमी की दूरी पर रेगड़ा गांव है। यहां भी जंगल में नाले के किनारे कई बार अवैध महुआ शराब पकड़ा गया है। महुआ शराब की तस्कर तेजी से हो रही है। तस्कर एक्टिव हैं। ऐसे में कई बार नाले किनारे कई शराब की भट्ठी भी देखी जा सकती है।

काफी मात्रा में तैयार की जा रही थी शराबः मामले में रायगढ़ उत्तर प्रभारी जितेश नायक ने बताया कि काफी मात्रा में महुआ शराब तैयार की जा रही थी। अवैध शराब निर्माण की सूचना मिलने के बाद मौके पर दबिश दी गई। आरोपी भाग निकले, लेकिन 205 लीटर महुआ शराब और 760 किलो महुआ लहान को जब्त किया गया। मामले में आरोपियों के खिलाफअपराध दर्ज किया गया है।

रायपुर-दुर्ग सहित 18 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ में रायपुर, दुर्ग, गरियाबंद, रायगढ़ सहित कई जिलों में सुबह से बादल छाए हुए हैं। दुर्ग में दोपहर से रिमझिम बारिश की शुरुआत हो गई है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों के लिए रायपुर, दुर्ग सहित प्रदेश के 18 जिलों के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के मुताबिक, आज से फिर मानसून सक्रिय हो सकता है। प्रदेश में अगले 3 दिनों तक भारी बारिश हो सकती है। 1 जून से अब तक राज्य में 200.3 मिलीमीटर बारिश रिकार्ड की गई है। हालांकि अब तक 258.3 मिली मीटर बारिश हो जानी चाहिए थी। यह अनुमान से करीब 22% कम है। प्रदेश के 3 जिलों में सामान्य से अधिक बारिश रिकार्ड की गई है ।बलौदाबाजार में 20%, बिलासपुर में 30% और कोरबा में 29% ज्यादा पानी बरसा है।

इंस्टाग्राम से दोस्ती कर कॉलेज छात्रा से रेप

ब्रेकअप कर छोड़ा तो थाने पहुंची प्रेमिका, पुलिस ने प्रेमी को किया गिरफ्तार

बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में युवक ने पहले कॉलेज छात्रा से इंस्टाग्राम के माध्यम से दोस्ती की, फिर शादी करने का वादा कर रेप किया। दुष्कर्म के बाद युवक ने ब्रेकअप कर लिया। उसकी हरकतों से परेशान होकर युवती ने थाने में थ्स् दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है। सरकंडा क्षेत्र में रहने वाली 19 वर्षीय युवती कॉलेज छात्रा है। उसने अपनी शिकायत में बताया कि करीब साल भर पहले पढ़ाई के दौरान उसकी पहचान सिविल लाइन क्षेत्र के गणेश चौक के पास रहने वाले सुमित साहू (19) से हुई। पहले दोनों आपस में मैसेज से बातचीत करने लगे, जिसके बाद जान-पहचान बढ़ी तो प्यार का इजहार किया। युवती भी उसे चाहने लगी।

शादी करने का वादा कर किया दुष्कर्मः इसी दौरान युवक ने उसके साथ शादी करने का वादा किया और युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाया, फिर बाद में युवती से पीछा छुड़ाने के लिए सुमित ने संबंध तोड़ लिया। इस दौरान युवती ने पहले उसे शादी करने के लिए दबाव बनाया।

झोलाछाप डॉक्टर्स पर कसा शिकंजा

गांव-गांव घूमकर भी कर रहे थे इलाज, 8 क्लीनिक पर जड़ा ताला, 10 को संचालकों को नोटिस

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बस्तर में झोलाछाप डॉक्टरों और अवैध रूप से क्लीनिक का संचालन करने वालों पर कार्रवाई की गई है। जिला प्रशासन ने जगदलपुर के 8 क्लीनिक पर ताला जड़ा है, जबकि बिना पंजीयन क्लीनिक का संचालन करने वाले 10 क्लीनिक संचालकों को नोटिस जारी किया गया है।

बताया जा रहा है कि झोलाछाप डॉक्टर भी गांव-गांव घूमकर इलाज कर रहे थे, जिसकी शिकायत मिलने पर कार्रवाई की गई है। जगदलपुर में संचालित सागर दवाखाना को जिला प्रशासन ने बिना योग्यता के क्लीनिक का संचालन करने के मामले में सील बंद कर दिया गया है।

बस्तर में लिजा मेडिकल स्टोर को सीलः इसी तरह बिना चिकित्सकीय योग्यता के बकावंड में क्लीनिक का संचालन करने वाले चंद्रशेखर मौर्य, नानगुर में संदीपदास, लोहंडीगुड़ा में डॉक्टर पीतांबर साहू, करपावंड में संचालित मंडल प्रायमरी हेल्थ केयर सेंटर, तोकापाल में दीनानाथ तिवारी, दरभा ब्लॉक के चिंगपाल में गिरीश कुमार कश्यप, बस्तर में लिजा मेडिकल स्टोर्स को सील कर दिया गया है।

10 को नोटिसः मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि नर्सिंग होम एक्ट के तहत अवैध दवाखानों एवं अपंजीकृत चिकित्सकों के विरूद्ध लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिला मुख्यालय जगदलपुर स्थित आशा क्लीनिक, जगन्नाथ क्लीनिक, दुर्गा क्लीनिक, एपेक्स डेंटल क्लीनिक, डॉ. के.के. राय, नेहा डेंटल क्लीनिक को नोटिस दिया गया है।

ब्लॉक अंतर्गत साहू मेडिकल स्टोर के संचालक घनाराम साहू, डॉ. हरीश मरकाम, तोकापाल ब्लॉक अंतर्गत ए.के. विश्वास सड़क पारा को नर्सिंग होम एक्ट के तहत पंजीयन न होने के कारण नोटिस जारी किया गया है।

संयुक्त टीम कर रही कामः जिला प्रशासन द्वारा यह कार्रवाई बस्तर जिले में झोलाछाप डॉक्टरों अवैधानिक तरीके से क्लीनिक का संचालन तथा गांव-गांव घूमकर मरीजों का इलाज करने के संबंध में मिल रही शिकायतों को देखते हुए की जा रही है।

जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम जिला मुख्यालय से लेकर विकासखंड मुख्यालयों एवं गांवों में संचालित दवाखानों, डॉक्टरों और मेडिकल स्टोर्स में लगातार दबिश देकर उनकी वैधानिकता की जांच-पड़ताल कर रही है।

हाइवा से टकराई स्कूटी, एमबीबीएस छात्र की मौत

यूक्रेन से पढ़ाई कर कोरबा में कर रहा था इंटर्नशिप, शादी से लौटते वक्त हादसा

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले के नेशनल हाइवे 49 पर सड़क किनारे खड़ी हाइवा के पीछे टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि युवक अफरीद गांव से जांजगीर आ रहा था, तभी हादसे का शिकार हो गया। घटना सारागांव थाना क्षेत्र के अफरीफ और हाथनेवार के पास हुआ है।

मिली जानकारी के मुताबिक युवक का नाम चनद्रभान लाठिया (33) है, जो यूक्रेन से एमबीबीएस की पढ़ाई कर कोरबा जिले के अस्पताल में इंटर्नशिप कर रहा था। वह 6 जुलाई की रात अफरीद गांव में अपने रिश्तेदार की शादी में गया था। वहां से रात में जांजगीर लौटते वक्त हादसे का शिकार हो गया।

स्कूटी से 20 मीटर दूर गिरा युवक, मौतः वह स्कूटी से नेशनल हाइवे 49 पर पहुंचा था कि सड़क किनारे खड़े हाइवा के पीछे टकरा गया।

स्कूटी के परखच्चे उड़ गए और युवक स्कूटी से 20 मीटर दूर सड़क के बीच जाकर मुंह के बल जा गिरा, जिसे चेहरा, सिर, सीना और अन्य जगहों में गंभीर चोट लगने से मौके पर मौत हो गई।

साइड लाइट नहीं जलाया गया था, जिससे हादसा हुआः परिजनों का आरोप है कि चालक सड़क किनारे हाइवा को खड़ी कर कोई भी साइड लाइट नहीं जलाया गया था, जिससे यह हादसा हुआ है। परिजनों ने बताया कि चंद्रभान 30 जून को ही इंटर्नशिप खत्म किया था। 8 जुलाई को मेडिकल की लाइसेंस के लिए उसे रायपुर जाना था।

शव परिजनों को सौंपा गयाः सारागांव पुलिस ने बताया कि घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंच शव को पोस्टमॉर्टम के के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है। हाइवा को जब्त कर लिया गया है। साथ ही परिजनों की शिकायत पर ड्राइवर पर भी एफआईआर की गई है।

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में 6 आतंकी ढेर, 2 जवान शहीद

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में रविवार (6 जुलाई) को लगातार दूसरे दिन मुठभेड़ जारी है। मुदरघम और चिन्निगम फ्रिसल में अबतक 6 आतंकी मारे गए हैं। दो जवान शहीद हुए हैं। मुदरघम में एक-दो आतंकियों और चिन्निगम फ्रिसल में एक और आतंकी के छिपे होने की संभावना है। मुदरघम में आज सुबह दो आतंकी मारे गए हैं। यहां शनिवार (6 जुलाई) को एक आतंकी मारा गया था। एक जवान शहीद हो गया था। कुलगाम के चिन्निगम फ्रिसल में कल चार आतंकी मारे गए। एक जवान शहीद हुआ था। जम्मू-कश्मीर के डीजीपी आरआर स्वैन ने बताया कि दोनों जगहों पर मुठभेड़ जारी है। हमें स्थानीय आतंकियों के भी शामिल होने की खबर मिली है। 6 आतंकी मारे गए हैं। यह सुरक्षाबलों के लिए एक बड़ा मील का पत्थर है। दूसरी तरफ, जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के मंजाकोट इलाके में आतंकियों ने रविवार सुबह एक आर्मी कैंप पर हमला कर दिया। इसमें एक जवान घायल हो गया। जवानों की जवाबी कार्रवाई के बाद आतंकी घने जंगल के रास्ते भाग गए। सेना और पुलिस ने सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है।

भारत में ईरान के दूत ने कहा- कनेक्टिविटी भारत-ईरान संबंधों की रीढ़ है

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में ईरान के राजदूत इराज इलाही ने शुक्रवार को इस बात पर जोर दिया कि कनेक्टिविटी भारत-ईरान संबंधों की रीढ़ है, उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक रूप से दोनों देश संबंधों को मजबूत करने के लिए सहमत हुए हैं। ईरान में राष्ट्रपति चुनाव से पहले दूत ने कहा कि दोनों देशों ने अलग-अलग समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। हमने विभिन्न समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। हमने सहयोग के लिए विभिन्न क्षेत्रों को परिभाषित किया है। कनेक्टिविटी हमारे संबंध का मुख्य हिस्सा है और सांस्कृतिक रूप से, हम दोनों देश संबंध को मजबूत करने पर सहमत हुए हैं, दूत ने कहा। उन्होंने आगे विश्वास जताया कि ईरान के नए राष्ट्रपति नई ऊर्जा लाएंगे और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को ऊर्जा देंगे। यह पूछे जाने पर कि भविष्य में दोनों देश किन प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, इलाही ने कहा, कनेक्टिविटी हमारे संबंधों की रीढ़ है।

झारखंड में होगा मंत्रिमंडल विस्तार

रांची (एजेंसी)। आज यानी 8 जुलाई को विधानसभा सत्र के दौरान हेमंत सोरेन अपनी सरकार की बहुमत साबित करेंगे। इसके बाद मंत्रिमंडल विस्तार होगा। सूत्रों के मुताबिक जामताड़ा से कांग्रेस पार्टी के विधायक इरफान अंसारी भी मंत्रिपद की शपथ लेंगे। बता दें कि टेंडर कमीशन घोटाला में आलमगीर आलम की गिरफ्तारी और फिर मंत्रिपद से इस्तीफे के बाद कांग्रेस कोटे के 3 ही मंत्री रह गये थे। आलमगीर आलम की जगह नया मंत्री बनाया जाना था। अब अल्पसंख्यक समुदाय से इरफान अंसारी ही एकमात्र विधायक हैं, इसलिए उनका मंत्री बनना तय है। इसके अलावा भी कुछ नये चेहरे दिख सकते हैं। नये मंत्री कल ही राजभवन में शपथ ग्रहण करेंगे। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन मंत्रियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाएंगे। झामुमो कोटे से मंत्रिमंडल में मिथिलेश ठाकुर, हफीजुल अंसारी, बेबी देवी, बसंत सोरेन और दीपक बरुआ का शामिल होना तय माना जा रहा है। जेएमएम से बैद्यनाथ राम को 12वें मंत्री के तौर पर मंत्रिमंडल में जगह मिल सकती है। वहीं, राजद कोटो से सत्यानंद भोक्ता की मंत्रिमंडल में जगह पक्की है। बता दें कि विधानसभा की कार्यवाही सुबह 11 बजे से शुरू हो जायेगी। चर्चा है कि शाम में हेमंत सरकार के मंत्रिमंडल का विस्तार किया जा सकता है।

इजराइल की गाजा के स्कूल पर एयरस्ट्राइक, 16 की मौत

इजराइल (एजेंसी)। इजराइली सेना ने शनिवार को गाजा में एक स्कूल पर एयरस्ट्राइक की। इसमें 16 लोगों की मौत हो गई और 75 से ज्यादा घायल हो गए। अलजजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक ये स्कूल संयुक्त राष्ट्र का था, जहां शरणार्थियों को रखा गया था।

स्थानीय लोगों के मुताबिक इजराइली सेना ने पहले स्कूल को चारों ओर से घेरा और फिर उस पर हमला कर दिया। इजराइल के हमले से स्कूल की इमारत नीचे गिर गई, जिसमें रह रहे बच्चे दब गए है। स्थानीय लोग रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहे हैं। अब तक दो बच्चों को बचा लिया है, जिसमें से एक बच्ची की हाथ में गंभीर चोट आई है। वहीं दूसरे बच्चे के चेहरा और सिर पर कई चोट के निशान हैं। संयुक्त राष्ट्र की रेस्क्यू टीम के मुताबिक पिछले महीने भी इजराइली सेना ने एक स्कूल को निशाना बनाया था।

इजराइली सेना ने पहले स्कूल को सेफ जोन बताया था: फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, मरने वालों में ज्यादा बच्चे और महिलाएं हैं। 50 घायलों का इलाज किया जा रहा है, बाकी लोगों का मौके पर ही इलाज किया गया। वहीं इजराइली सेना ने स्कूल को आतंकवादियों का अड्डा बताया।

हमले से बचने के सैकड़ों शरणार्थियों ने स्कूल की आस-पास की जगह को छोड़ दिया है। इससे पहले इजराइल ने स्कूल को सेफ जोन बताया था। पिछले महीने किए स्कूल पर हमले में 40 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी और दर्जनों लोग घायल हो गए थे।

जंग में 38 हजार फिलिस्तीनियों की मौत: इजराइल-हमास जंग के बीच पिछले 9 महीने से जंग जारी है। इसमें अब तक 38 हजार फिलिस्तीनियों की मौत हो चुकी है, इनमें 14,500 बच्चे शामिल हैं। वहीं गाजा के करीब 80त्न लोग बेघर हो गए। यह जंग अब मिस्र बॉर्डर के करीब गाजा के राफा शहर पहुंच गई है। दरअसल, जंग की शुरुआत में इजराइल की कार्रवाई से बचते हुए लोगों ने उत्तरी गाजा छोड़कर राफा में शरण ली थी। अलजजीरा के मुताबिक इस इलाके में 10 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं। अब इजराइल की सेना यहां भी हमले की योजना बना रही है। इजराइल का तर्क है कि उन्होंने अब तक हमास की 24 बटालियन को खत्म कर दिया है। लेकिन अब भी 4 बटालियन राफा में छिपी हुई हैं। इनके खात्मे के लिए राफा में ऑपरेशन चलाना जरूरी है।

रूस ने यूक्रेन पर 24 घंटे में 55 एयरस्ट्राइक की, 11 की मौत

रूस ने पिछले 24 घंटों में यूक्रेन पर 55 बार एयरस्ट्राइक की है। जिसमें 11 लोगों की मौत हो गई और 43 से ज्यादा लोग घायल हो गए। रूस की न्यूज एजेंसी त्रह्व के मुताबिक रूसी सेना ने शुक्रवार को यूक्रेन की अलग-अलग जगहों पर 6 रॉकेट और 70 से ज्यादा ग्लाइड बम से हमला किया। यूक्रेनी अधिकारियों के मुताबिक रूसी सेना रातभर से रुक-रुक कर हमले कर रही है। उन्होंने उत्तरी यूक्रेन में बिजली के प्लांट पर हमला किया, जिससे 1 लाख से ज्यादा लोग बिना बिजली के रहने को मजबूर हैं। अधिकारियों के मुताबिक रूस के हमलों के बीच बिजली को बहाल करना मुश्किल हो रहा है। रूसी सैनिक ड्रोन से पानी के टैंक को भी निशाना बना रहे हैं। वहीं यूक्रेनी सेना ने कहा कि उसने 27 में से 24 रूसी ड्रोनों को मार गिराया। देश में सबसे ज्यादा नुकसान पूर्वी क्षेत्रों में हुआ है। यूक्रेनी सेना ने पूरे इलाके में कुछ दिनों तक ऐसे हमले जारी रहने की चेतावनी जारी की है। यूक्रेनी जनरल स्टाफ ने बताया कि शनिवार को यूक्रेनी और रूसी सेनाओं के बीच 45 बार आमने-सामने से भिडंत हुई है।

शिंदे ने पटोले पर किया पलटवार, कहा- कांग्रेस को भ्रष्टाचार पर बोलने का नैतिक अधिकार नहीं

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने रविवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने के लिए कांग्रेस की आलोचना की। शिंदे ने कहा कि देश की जनता 2004 से 2014 के बीच कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के दौरान हुए कई घोटालों से अवगत है। शिंदे ने नागपुर हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से कहा, कांग्रेस को भ्रष्टाचार पर बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। हमने कोयला आवंटन, राष्ट्रमंडल खेल, अगस्ता हेलीकॉप्टर खरीद आदि में घोटाले देखे हैं। कांग्रेस का शासन 'कट, 'कमीशन और भ्रष्टाचार पर आधारित था। वह कांग्रेस की महाराष्ट्र इकाई के प्रमुख नाना पटोले के उस कथित बयान का जवाब दे रहे थे, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भ्रष्ट लोगों का नेता बताया था।

पटोले का यह बयान कथित तौर पर मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) द्वारा शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के मुंबई उत्तर पश्चिम लोकसभा सीट से नवनिर्वाचित

सांसद रवींद्र वायकर को जोगेश्वरी लक्जरी होटल मामले में क्लीन चिट दिए जाने के संबंध में आया है। शिंदे ने यह भी विश्वास जताया कि महायुति (सत्तारूढ़ गठबंधन जिसमें भाजपा, शिवसेना और अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) शामिल है) महाराष्ट्र विधान परिषद की 11 सीट में से नौ पर जीत हासिल करेगी, जिसके लिए 12 जुलाई को चुनाव होने हैं।

शिवसेना-नेता के बेटे ने बीएमडब्ल्यू से दंपती को टक्कर मारी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे में चर्चित पोर्श एक्सीडेंट केस के बाद अब मुंबई में हिट एंड रन की घटना सामने आई है। मुंबई के वर्ली में रविवार (7 जुलाई) सुबह एक तेज रफ्तार बीएमडब्ल्यू ने स्कूटी सवार दंपती को टक्कर मार दी। आरोपी ने मौके से भागने के दौरान 45 साल की महिला को कार से 100 मीटर तक घसीटा, जिससे उनकी मौत हो गई। पति घायल है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, कार मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की पार्टी शिवसेना के नेता राजेश शाह का 24 साल का बेटा मिहिर शाह चला रहा था। उसके साथ ड्राइवर भी था। घटना के बाद से मिहिर फरार है। पुलिस ने राजेश शाह और ड्राइवर को हिरासत में लिया है। कार भी जब्त कर ली है। पुलिस ने बताया कि वर्ली के कोलीवाड़ा इलाके में रहने वाले प्रदीप नखवा और उनकी पत्नी कावेरी नखवा मछुआरे समुदाय के हैं। दोनों हर रोज ससून डॉक पर मछली खरीदने जाते थे। हर रोज की तरह वे रविवार को भी ससून डॉक से लौट रहे थे। इसी दौरान सुबह 5:30 बजे अटरिया मॉल के पास एक तेज रफ्तार बीएमडब्ल्यू ने उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि स्कूटी पलट गई और दोनों पति-पत्नी कार के बोनट पर गिर गए। पति खुद को बचाने की कोशिश में बोनट से तुरंत कूद गया, लेकिन पत्नी उठ नहीं सकी। भागने की हड़बड़ी में आरोपी ने महिला को कुचल दिया

इस खिलाड़ी की कप्तानी में जीतेंगे 2025 डब्ल्यूटीसी फाइनल और चैंपियंस ट्रॉफी-जय शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने रविवार को एक वीडियो संदेश के जरिए वेस्टइंडीज में टी20 विश्व कप खिताब जीतने पर टीम इंडिया को बधाई दी और साथ ही रोहित शर्मा की कप्तानी में अगले साल होने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल और चैंपियंस ट्रॉफी जीतने का भरोसा भी जताया। शाह ने भारतीय टीम को हार्दिक बधाई दी और जीत को निवर्तमान कोच राहुल द्रविड़ तथा रोहित, विराट कोहली और रविंद्र जडेजा की सीनियर तिकड़ी को समर्पित किया, जिन्होंने बारबाडोस में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खिताबी जीत के बाद टी-20 अंतरराष्ट्रीय

क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी। शाह ने एक वीडियो संदेश में कहा, इस ऐतिहासिक जीत के लिए टीम इंडिया को बहुत-बहुत बधाई। मैं यह जीत कोच राहुल द्रविड़, कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली और रवींद्र जडेजा को समर्पित करना चाहूंगा। पिछले एक साल में यह हमारा तीसरा फाइनल था। उन्होंने कहा, हम जून 2023 में डब्ल्यूटीसी फाइनल में थे, लेकिन हार गए। नवंबर 2023 में लगातार दस जीत के साथ हमने बहुत से दिल जीते, लेकिन वनडे विश्व कप नहीं जीत सके। मैंने राजकोट में कहा था कि हम जून 2024 में कप जीतेंगे, हम दिल जीतेंगे, विश्व कप जीतेंगे और भारत का झंडा ऊंचा करेंगे, और हमारे कप्तान ने बिल्कुल वैसा ही किया। बीसीसीआई सचिव ने फाइनल मुकाबले के अंतिम पांच ओवरों के महत्व को रेखांकित किया, जिसने भारत की ओर गति को बदल दिया क्योंकि जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पांड्या ने महत्वपूर्ण विकेट हासिल किए

बिहार में बढ़ते अपराध को लेकर तेजस्वी का एनडीए सरकार पर हमला

पटना (एजेंसी)। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और राज्य विधानसभा में विपक्ष के मौजूदा नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एक बार फिर बढ़ते अपराध को लेकर एनडीए सरकार पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने बीते तीन-चार दिनों की आपराधिक घटनाओं को लेकर सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि सावधान! आप एनडीए सरकार वाले बिहार में हैं। तेजस्वी यादव ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा, आज जुलाई रविवार, आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को विगत दिनों में के महा मंगलराज में घटित अपराधियों द्वारा बेख़ौफ़ गोली चला मानव हत्याएं करने वाली घटनाओं का दु:खद विवरण इस प्रकार है।

केंद्रीय मंत्री बनने के बाद पहली बार सीएम नीतीश से मिले चिराग पासवान

पटना (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री बनने के बाद आज पहली बार लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से उनके आवास पर जाकर मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच नौकरी और गिरते पुल सहित कई मुद्दों को लेकर बातचीत हुई।

चिराग पासवान ने नीतीश से मुलाकात की कुछ तस्वीरें सोशल मीडिया 'एक्स पर साझा करते हुए कहा, ''केंद्रीय मंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद आज पहली बार बिहार के माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी से उनके आवास पर सौजन्य भेंट कर उनका आशीर्वाद

लिया। वर्ष 2014 में मुख्यमंत्री जी के द्वारा पूर्व की नियमावलियों में संशोधन करते हुए स्वैच्छिक सेवानिवृत के तहत दफादार/चौकीदार के आश्रितों के बहाली का प्रावधान करते हुए बिहार चौकीदार संवर्ग नियमावली 2014 का प्रावधान किया गया था, जिसके तहत 2023 तक दफादार/चौकीदार के आश्रितों की बहाली होती रही है। पूर्व से सेवानिवृत एवं सेवानिवृत होने वाले दफादारों/चौकीदारों के आश्रितों के बहाली तथा स्वेच्छिक सेवानिवृत के शेष आश्रितों को नियुक्ति पत्र अभी तक निर्गत नहीं किया गया है, जबकि एक-दो जिलों में नई बहाली की प्रक्रिया को शुरू कर दिया गया है जो चिंताजनक विषय है। लोजपा अध्यक्ष ने आगे लिखा, मेरी पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) मांग करती है कि इस प्रक्रिया को पूर्व की तरह ही पुन: बहाल किया जाए।

नीट-यूजी काउंसलिंग इस सप्ताह से शुरु हो सकती है, सरकार ने जारी किया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट परीक्षा को सफलतापूर्वक पास करने के बाद उम्मीदवार को काउंसलिंग प्रक्रिया से गुजरना होता है। इस काउंसलिंग के माध्यम से नीट परीक्षा में सफल उम्मीदवारों के लिए उनके रैंक के अनुसार मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश सुरक्षित करने का मार्ग प्रशस्त करती है। बीते शनिवार को नीट यूजी काउंसलिंग को लेकर सरकार ने यह जानकारी दी है कि एमसीसी द्वारा अपनी वेबसाइट पर परीक्षा प्रक्रिया पूरी होने और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग द्वारा सीट मैट्रिक्स को अंतिम रूप देने के बाद काउंसलिंग शेड्यूल की घोषणा की जाएगी। आपको बता दें कि काउंसलिंग कई चरणों में आयोजित की जाती है। नीट यूजी 2024 काउंसलिंग और सीट अलॉटमेंट की प्रक्रिया जुलाई के तीसरे सप्ताह में शुरू हो सकती है।

पार्टी ऑफिस में नहीं दफनाया जाएगा बीएसपी नेता का शव

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के चेन्नई में मारे गए बहुजन समाज पार्टी प्रदेश अध्यक्ष के. आर्मस्ट्रॉन्ग के शव को पार्टी कार्यालय में नहीं दफनाया जाएगा। मद्रास हाईकोर्ट ने पार्टी कार्यालय में उनका शव दफनाए जाने की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया है। याचिका मृत नेता की पत्नी के. पोरकोडी ने लगाई थी। कोर्ट ने कहा कि बीएसपी ऑफिस संकरी गली में बना है। वहां ज्यादा जगह नहीं है। ऐसे में अगर वहां ज्यादा लोग जमा होते हैं तो भगदड़ का खतरा हो सकता है। कोर्ट ने कहा कि बसपा नेता के शव को चेन्नई से

लगे तिरुवल्लुवर जिले में एक एकड़ के निजी प्लॉट में दफनाया जा सकता है। कोर्ट ने यह निर्देश भी दिया कि शव की अंतिम यात्रा शांतिपूर्वक निकाली जानी चाहिए। जस्टिस वी भवानी सुब्बारायन ने कहा कि मृत नेता की पत्नी ने उनका शव दफनाने के लिए जो जगह चुनी है, वह एक संकरा रास्ता है। कोर्ट ने याचिकाकर्ता से पूछा कि क्या उनके दिमाग में कोई और लोकेशन भी है। इसके बाद याचिकाकर्ता ने तिरुवल्लुवर जिले में जगह का नाम बताया। इसके बाद स्थानीय पंचायत ने जरूरी व्यवस्थाएं कीं। के. आर्मस्ट्रॉन्ग के परिवार ने यह भी कहा कि वे एक मेमोरियल भी बनाना चाहते हैं। इसके बाद हाईकोर्ट ने कहा कि पहले वे नेता का अंतिम संस्कार पूरा कर लें। इसके बाद वे मेमोरियल की मांग लेकर राज्य सरकार के पास जा सकते हैं।

बांग्लादेश के मंत्री बोले- भारत एक राजनीतिक मित्र है, चीन विकास हासिल करने में हमारा मित्र है

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश सरकार के एक प्रमुख सदस्य ने अपने देश की संतुलित कूटनीति का सारांश प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत बांग्लादेश का समय-परीक्षित राजनीतिक मित्र है, और चीन बांग्लादेश के विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक मित्र है। ढाका में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, जो प्रधानमंत्री शेख हसीना की 8 जुलाई से शुरू होने वाली चार दिवसीय चीन यात्रा की प्रस्तावना के रूप में आयोजित किया गया था, परिवहन और सड़क मंत्री और सत्तारूढ़ अवामी लीग के

शक्तिशाली महासचिव ओबैदुल कादर ने कहा कि हसीना के आलोचक इस तथ्य को पचा नहीं पा रहे हैं कि उनके शासन में बांग्लादेश ने चीन और भारत की मदद से प्रमुख विकास परियोजनाओं को पूरा किया है।

अमरनाथ यात्रा-जम्मू से 6,145 तीर्थयात्रियों का एक और जत्था रवाना

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू से रविवार तड़के 6,000 से अधिक तीर्थयात्रियों का एक और जत्था दक्षिण कश्मीर हिमालय स्थित अमरनाथ गुफा मंदिर के लिए रवाना हुआ। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अमरनाथ यात्रा के लिए 6,145 तीर्थयात्रियों का दसवां जत्था 238 वाहनों के दो काफिलों में जम्मू भगवती नगर आधार शिविर से रवाना हुआ। 115 वाहनों के पहले काफिले में 2,697 तीर्थयात्री हैं। यह गंदेरबल जिले के बालटाल आधार शिविर के लिए तड़के करीब 3 बजकर 10 मिनट पर रवाना हुआ, जबकि 123 वाहनों का दूसरा काफिला 3,448 तीर्थयात्रियों के साथ अनंतनाग जिले के पहलगाम आधार शिविर के लिए रवाना हुआ है। तीर्थयात्रा 29 जून को अनंतनाग के 48 किलोमीटर लंबे नुनवान-पहलगाम मार्ग और गंदेरबल में बालटाल मार्ग

से शुरू हुई थी और यह 19 अगस्त को समाप्त होगी। अब तक डेढ़ लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित अमरनाथ गुफा में बाबा बर्फानी के दर्शन किये हैं।

रोज संसदीय प्रक्रियाओं का अपमान कौन करता है? विपक्ष तो नहीं करता-सिब्बल ने धनखड़ से कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने नए आपराधिक कानूनों पर कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम की टिप्पणियों की उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ द्वारा आलोचना किए जाने पर रविवार को उन पर निशाना साधा और कहा कि रोज संसदीय प्रक्रियाओं का अपमान विपक्ष नहीं करता है। कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने टिप्पणी की थी कि तीन नए आपराधिक कानून ''अंशकालिक लोगों ने तैयार किए। धनखड़ ने चिदंबरम पर निशाना साधते हुए इस बयान को अक्षम्य करार दिया था और इस

आपत्तिजनक और मानहानिकारक कथन को वापस लेने का अनुरोध किया था। धनखड़ ने कहा था कि वह एक राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र में चिदंबरम का

साक्षात्कार पढ़कर दंग रह गए, जिसमें उन्होंने कहा है कि नए कानून अंशकालिक लोगों ने तैयार किए हैं। सिब्बल ने रविवार को 'एक्स पर एक पोस्ट में कहा, ''धनखड़ ने तीन आपराधिक कानून अंशकालिक लोगों द्वारा तैयार किए जाने के चिदंबरम के बयान की आलोचना करते हुए इसे 'संसद की सूझ-बूझ का अपमान बताया जिसकी कोई माफी नहीं है। हम सभी अंशकालिक हैं धनखड़ जी। विपक्ष के प्रमुख नेता व राज्यसभा सदस्य ने कहा, ''और रोज संसदीय प्रक्रियाओं का अपमान कौन करता है? हम तो नहीं। उपराष्ट्रपति ने शनिवार को यहां भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) के 12वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा था।

भारत की युवा टीम पहले टी20 मैच में जिबावे से 13 रन से हारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुभमन गिल की अगुआई वाली युवा भारतीय टीम बल्लेबाजों के निराशाजनक प्रदर्शन के कारण शनिवार को यहां पांच मैच की श्रृंखला के पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में कम अनुभवी जिम्बाब्वे से 13 रन से पराजित हो गई। लेग स्पिनर रवि बिश्नोई की अगुआई में भारतीय गेंदबाजों ने जिम्बाब्वे को नौ विकेट पर 115 रन पर रोक दिया। पर उछाल भरी पिच पर भारतीय बल्लेबाजों को काफी मुश्किल आयी जिसने पावरप्ले में चार विकेट गंवा दिये और पूरी टीम 19.5 ओवर में 102 रन पर सिमट गयी। हाल में टी20 विश्व कप जीतने वाले भारत ने इस दौरे पर युवा खिलाड़ियों को उतारा था और उनके आसानी से जिम्बाब्वे पर जीत की उम्मीद थी।

लेकिन जिम्बाब्वे ने तेज गेंदबाज टेंडाई चतारा (16 रन देकर तीन विकेट) और कप्तान सिंकदर रजा (25 रन देकर तीन विकेट) की बदौलत भारत को हराकर उलटफेर कर दिया। यह 2024 में भारत की टी20 अंतरराष्ट्रीय में पहली हार थी। यह आठ साल में जिम्बाब्वे के खिलाफ भारत की पहली हार भी है। इस मैच में भारत ने तीन खिलाड़ियों को पदार्पण कराया। पदार्पण करने वाले अभिषेक शर्मा (शून्य) खाता भी नहीं खोल सके और पारी के पहले ही ओवर में ब्रायन बेनेट की गेंद पर डीप स्क्वायर लेग पर वेलिंगटन मास्काद्जा को कैच देकर आउट हुए। रूतुराज गायकवाड (07) ने नौ गेंद खेलकर एक चौका ही लगाया था कि ब्लेसिंग मुजारबानी की गुडलेंथ गेंद उनके बल्ले के किनारे से लगकर इनोसेंट काइया के हाथों में समां गयी। चतारा ने रियान पराग (02) और रिंकू सिंह (शून्य) दोनों को पांचवें ओवर में आउट किया जिससे भारतीय टीम का स्कोर चार विकेट पर 22 रन हो गया। कप्तान शुभमन गिल (31 रन) एक छोर पर डटे थे और दूसरे छोर पर लगातार विकेट गिरते देख रहे थे। विकेटकीपर बल्लेबाज ध्रुव जुरेल (06) के 10वें और कप्तान गिल के 11वें ओवर में आउट होते ही पूरे ओवर तक टिकने की उम्मीद भी खत्म हो गई। पर आवेश खान (16 रन) और वाशिंगटन सुंदर (27 रन) ने आठवें विकेट के लिए 23 रन जोड़कर भारत को 84 रन तक पहुंचाया। अंतिम ओवर में भारत को 16 रन चाहिए थे और एक विकेट बाकी था जिसके गिरते ही पारी खत्म हो गई। इससे पहले बिश्नोई (13 रन देकर चार विकेट) को ऑफ स्पिनर वाशिंगटन (11 रन देकर दो विकेट) का अच्छा साथ मिला जिससे जिम्बाब्वे की टीम बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद उछाल भरी पिच पर कोई मजबूत साझेदारी करने में जूझती नजर आयी। जिम्बाब्वे ने हालांकि तेज शुरुआत की और पावरप्ले में उसने दो विकेट पर 40 रन बना लिये थे। इनोसेंट काइया के मुकेश कुमार की गेंद पर आउट होने के बाद वेस्ली मधेवेरे (21 रन) और ब्रायन बेनेट (22 रन) ने तेजी से 34 रन जोड़े। इन दोनों ने बायें हाथ के तेज गेंदबाज खलील अहमद पर पांचवें ओवर में 17 रन जुटाये। बेनेट ने इसमें लगातार दो चौके जड़े जिससे ऐसा लग रहा था कि जिम्बाब्वे शुरूआती झटके से उबर रहा है। पर छठे ओवर में बिश्नोई ने बेनेट को अपनी गुगली पर आउट कर जिम्बाब्वे की पारी का रुख ही बदल दिया। फिर जिम्बाब्वे के तीन और बल्लेबाज पवेलियन लौट गये जिसमें मधेवेरे के अलावा ब्लेसिंग मुजारबानी और ल्यूक जोंगवे शामिल थे। कप्तान सिकंदर रजा (17 रन) के संयम से टीम ने संभलने की कोशिश की लेकिन लय खोने के कारण 41 रन पर छह विकेट गंवा बैठी। टीम में हड़बड़ाट साफ दिख रही थी। जिम्बाब्वे के पूर्व कप्तान एलिस्टेयर कैंपबेल के बेटे जोनाथन कैंपबेल (शून्य) आवेश खान की गेंद को कवर्स की ओर भेजकर एक रन लेना चाहते थे और उनके साथी डियोन मायर्स भी तैयार थे। लेकिन कैंपबेल अचानक मन बदलकर रूक गये और रन आउट हो गये। अब जिम्बाब्वे की उम्मीदें कप्तान रजा पर लगी थीं, उन्होंने आवेश पर सिर के ऊपर से छक्का जड़कर उम्मीद जगाई। पर आवेश ने अतिरिक्त उछाल का पूरा फायदा उठाते हुए रजा को जल्द ही आउट कर दिया। रजा गेंद को सही तरह से टाइम नहीं कर सके और गेंद डीप में बिश्नोई के हाथों में पहुंच गयी। वाशिंगटन ने लगातार दो गेंदों पर दो विकेट झटके। उन्होंने मायर्स (23 रन) और वेलिंगटन मास्काद्जा (शून्य) को पवेलियन भेजा। तमिलनाडु के इस गेंदबाज ने इस तरह टी20 में अपने 100 विकेट भी पूरे किये। क्लाइव मदांडे के नाबाद 29 रन की बदौलत जिम्बाब्वे 100 रन का आंकड़ा पार कर पायी।

इंडिया और पाक मैच का क्रेज बढ़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान मैच को लेकर फैंस की दीवानगी हर तरफ देखने को मिलती है। किसी भी खेल में इन देशों की टीमें जब आमने-सामने होती हैं तो मुकाबला काफी दिलचस्प हो जाता है। एक बार फिर फैंस को अपने चहेते खिलाड़ियों को खेलते हुए देखना का मौका मिलने वाला है। दरअसल, इंग्लैंड में वर्ल्ड चैंपियंस ऑफ लीजेंड्स 2024 खेली जा रही है। जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सी ले रही हैं। शनिवार को भारतीय चैंपियन और पाकिस्तान चैंपियन के बीच हाईवोल्टेज मुकाबला होने जा रहा है। इस मैच में भारत के पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह, सुरेश रैना, हरभजन सिंह, आरपी सिंह, इरफान पठान जैसे खिलाड़ी मौजूद रहेंगे। वहीं पाकिस्तान की ओर से शाहिद अफरीदी, यूनिस खान, शोएब मलिक, मिस्बाह उल हक मैच का हिस्सा होंगे। एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित वर्ल्ड चैंपियनिप ऑफ लीजेंड्स मैच के लिए सभी 23000 सीटें बिक चुकी हैं। डब्ल्यूसीएल की आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार 3 जुलाई को एजबेस्टन में शुरू हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स 18 जुलाई तक चलेगी। इंडिया चैंपियंस के खिलाड़ी सुरेश रैना ने कहा कि, पाकिस्तान के साथ खेलना हमेशा सम्मान की बात होती है और अब आज का मैच कोई अपवाद नहीं है।

माइकल वॉन को रवि शास्त्री ने दिया करारा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम ने टी20 वर्ल्ड कप में अपना एकतरफा वर्चस्व कायम करते हुए खिताब जीता। हालांकि, कुछ ऐसे खिलाड़ी भी हैं जो भारत की इस खिताबी जीत को पचा नहीं पा रहे हैं। टूर्नामेंट के दौरान ही इंग्लैंड के पूर्व खिलाड़ी माइकल वॉन ने कहा था कि आईसीसी ने ये टूर्नामेंट भारत के हिसाब से शेड्यूल किया ताकि उन्हें कोई परेशानी न हो।

टूर्नामेंट खत्म होने के बाद अब भारत के पूर्व हेड कोच रवि शास्त्री ने वॉन को करार जवाब दिया है। रवि शास्त्री ने टाइम्स नाऊ से बातचीत में माइकल वॉन को सोच समझकर बोलने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि, माइकल वॉन जो चाहे कह सकता है। भारत में किसी को इससे फर्क नहीं पड़ता। उसे इंग्लैंड की टीम को संभालने दो। उसे इंग्लैंड को भारत के खिलाफ सेमीफाइनल में हार पर सलाह देनी चाहिए। भारत को ट्रॉफी उठाने की जरूरत है, मैं जानता हूं कि इंग्लैंड दो बार जीता, लेकिन भारत चार बार जीता है।

मुझे नहीं लगता माइकल ने कभी भी कप उठाया है। तो बोलने से दो बार सोचें। वह मेरे साथ हैं, पर उनके लिए यही मेरा जवाब है। वॉन ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा था, सच में, ये भारत का टूर्नामेंट है। वह जब चाहें तब खेल सकते हैं। उन्हें पता होता है कि उनका सेमीफाइनल कहां होगा। उन्होंने अपने सारे मैच सुबह खेलें हैं ताकि लोग रात में भारत में टीवी पर उन्हें देख सकें।

भारत- जिम्बाब्वे के बीच टी20 सीरीज

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुभमन गिल की कप्तानी भारत की युवा क्रिकेट टीम जिम्बाब्वे के दौरे पर है। जहां दोनों टीमों के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का आगाज हो चुका है। वहीं जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। इस दौरान तीन खिलाड़ियों ने भारत के लिए डेब्यू किया है। इसमें रियान पराग, ध्रुव जुरेल और अभिषेक शर्मा का नाम शामिल है। बता दें कि, ये तीनों खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट के साथ-साथ आईपीएल में भी शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। रियान पराग और अभिषेक शर्मा ने आईपीएल 2024 में धमाकेदार प्रदर्शन किया था। जिसकी बदौलत इन खिलाड़ियों को भारत के लिए डेब्यू करने का मौका मिला। जबकि ध्रुव जुरेल इस सीरीज के दौरान विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभालेंगे। रिंकू सिंह, आवेश खान और खलील अहमद भी इस मैच का हिस्सा हैं, जो भारतीय टीम के साथ टी20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए रिजर्व खिलाड़ी के रूप में यात्रा करेक टीम में आए हैं। शुभमन गिल ने टॉस जीतकर कहा कि, हम पहले फील्डिंग करेंगे। मुझे लगता है कि ये अच्छी पिच है। इसमें बाद में ज्यादा बदलाव नहीं होगा। हमने 11 साल बाद कोई आईसीसी इवेंट जीता है, आपको हमेशा खुद से कुछ उम्मीदें होती हैं। हमारे तीन डेब्यूटेंट हैं, अभिषेक शर्मा, ध्रुव जुरेल और रियान पराग।

महिला टी20 एशिया कप में भारत की अगुआई करेंगी हरमनप्रीत कौर

मुंबई (एजेंसी)। हरमनप्रीत कौर 19 जुलाई से श्रीलंका में होने वाले महिला टी20 एशिया कप के लिए 15 सदस्यीय भारतीय टीम की अगुआई करेंगी। हरमनप्रीत अभी चेन्नई में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चल रही टी20 श्रृंखला में खेल रही हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला में शानदार फॉर्म में चल रही सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना को उप-कप्तान बनाया गया है। मुख्य टीम की 15 खिलाड़ियों के अलावा श्वेता सहरावत, साइका इशाक, तनुजा कंवर और मेघना सिंह को रिजर्व खिलाड़ियों के तौर पर शामिल किया गया है। भारत को टूर्नामेंट के ग्रुप ए में रखा गया है जिसमें चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान (19 जुलाई), संयुक्त अरब अमीरात (21 जुलाई) और नेपाल (23 जुलाई) शामिल हैं। सभी मैच रंगिरी दांबुला अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेले जायेंगे। भारत गत विजेता है और उसने रिकॉर्ड सात बार प्रतियोगिता जीती है।

भारतीय टीम- हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), शेफाली वर्मा, दीप्ति शर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, ऋचा घोष (विकेटकीपर), उमा छेत्री (विकेटकीपर), पूजा वस्त्रकार, अरुंधति रेड्डी, रेणुका सिंह ठाकुर, दयालन हेमलता, आशा शोभना, राधा यादव, श्रेयंका पाटिल और सजना सजीवन।

पीसीबी को लग सकता है जोर का झटका

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान नहीं जाएगी टीम इंडिया!

नई दिल्ली नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 2025 संस्करण में हिस्सा लेने के लिए अगले साल पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मेन इन ब्लू आठ-टीम आईसीसी इवेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगा, जो 19 फरवरी से 9 मार्च तक खेला जाएगा। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, भारत की पाकिस्तान यात्रा के बारे में कोई भी फैसला भारत सरकार द्वारा लिया जाएगा। सूत्र ने बताया कि हालांकि टूर्नामेंट के विवरण पर अभी तक चर्चा नहीं की गई है, लेकिन इसकी बहुत कम संभावना है कि भारतीय टीम पाकिस्तान की यात्रा करेगी। अंततः निर्णय भारत सरकार पर निर्भर है। हालाँकि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) इस मुद्दे को इस महीने श्रीलंका में होने वाली आईसीसी बैठक में उठाने की योजना बना रहा है। आगे कहा गया है कि इस मामले पर सरकार का निर्णय अंतिम होगा, क्योंकि हमने अभी तक आंतरिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की है। चूंकि यह एक आईसीसी इवेंट है, इसलिए हमारे पास कोई भी एकतरफा निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। हालाँकि, अगली आईसीसी बैठक के दौरान अधिक विवरण सामने आ सकते हैं। भारत ने 2008 के बाद से पाकिस्तान की यात्रा नहीं की है। पिछले 16 वर्षों में, केवल एक बार इन दोनों टीमों ने एक-दूसरे के खिलाफ द्विपक्षीय श्रृंखला खेली है, और वह 2012-13 में हुई थी। भारत को पिछले साल एशिया कप में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तान जाना था, लेकिन दोनों देशों के बीच तनाव के कारण टूर्नामेंट को पाकिस्तान से बाहर स्थानांतरित कर दिया गया और फाइनल सहित भारत के मैच श्रीलंका में खेले गए। हालाँकि, भारत के पाकिस्तान दौरे को छोड़ने के फैसले के बावजूद, पाकिस्तान ने आईसीसी पुरुष एकदिवसीय विश्व कप 2023 में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की और हैदराबाद, अहमदाबाद, चेन्नई, बेंगलुरु और कोलकाता में मैच खेले। कुछ दिन पहले, यह बताया गया था कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए अपना ड्राफ्ट प्रस्तुत किया था और लाहौर को सात, रावलपिंडी को पांच और कराची को तीन मैच सौंपे थे। रिपोर्ट में बताया गया कि भारत और पाकिस्तान के बीच हाईवोल्टेज मैच 1 मार्च को लाहौर के प्रतिष्ठित गद्दाफी स्टेडियम में होगा।

अंबानी परिवार ने मनाया टी20 विश्व कप जीतने का जश्न

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की टी20 विश्व कप 2024 की जीत के लिए पूरे देश में जश्न मनाया जा रहा है क्योंकि मेन इन ब्लू ट्रॉफी के साथ घर लौट आए हैं। गुरुवार को दिल्ली और मुंबई में उत्सव से भरे दिन के बाद, भारत के कप्तान रोहित शर्मा को अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के संगीत समारोह के दौरान अंबानी परिवार द्वारा सम्मानित किया गया। भारतीय कप्तान ने शुक्रवार, 5 जुलाई को टीम के साथी सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पंड्या के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया। एक वीडियो में, भारत के सितारों को उनके एमआई मालिकों नीता और आकाश अंबानी द्वारा सम्मानित किया गया। इस दौरान सभी मेहमान खड़े हुए और एक विशेष भाव के साथ खिलाड़ियों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। पूरे हॉल में देशभक्ति की भावना व्याप्त हो गई क्योंकि सभी ने अपनी भुजाएँ हवा में रख दीं और उन्हें %लहरा दो% गाने की धुन पर बाएँ से दाएँ घुमाया। विशेष रूप से, इन तीनों खिलाड़ियों ने टीम इंडिया के विजयी अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समारोह में भाग लेने वाले परिवार, दोस्तों और मेहमानों सहित पूरे दर्शकों ने खड़े होकर तालियां बजाईं और जोर-जोर से जयकार की, साथ ही भावुक दिख रही नीता अंबानी ने बताया कि यह जीत उनके लिए कितनी व्यक्तिगत है क्योंकि तीन दिग्गज भी उनकी मुंबई इंडियंस परिवार का हिस्सा हैं। नीता अंबानी ने उल्लेख किया कि कैसे देश ने सांस रोककर और मुंह में दिल रखकर देखा कि कैसे भारतीय टीम ने लगभग असंभव स्थिति से जीत हासिल की। उन्होंने अपनी टिप्पणी के माध्यम से हार्दिक पंड्या के बारे में लोगों की भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया- कठिन समय नहीं रहता लेकिन कठिन लोग टिकते हैं।

रोहित टूर्नामेंट में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे क्योंकि उन्होंने टीम को विस्फोटक शुरुआत दी। सलामी बल्लेबाज ने आठ पारियों में 36.71 की औसत और 156.70 की स्ट्राइक रेट से 257 रन बनाए, जिसमें उनके नाम तीन अर्द्धशतक भी शामिल हैं। ईशान किशन, श्रेयस अय्यर, क्रुणाल पंड्या, केएल राहुल और सर्वकालिक महान महेंद्र सिंह धोनी सहित मुंबई इंडियंस के कई साथियों और अन्य भारतीय क्रिकेटरों ने दर्शकों के बीच इन पलों का आनंद लिया। स्टार पेसर जसप्रित बुमरा, जो यात्रा कर रहे थे, उपस्थित नहीं हो सके।

भारतीय टीम के कैप्टन कूल मना रहे 43वां जन्मदिन

नई दिल्ली (एजेंसी)। 07 जुलाई को टीम इंडिया के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी अपना 43वां जन्मदिन मना रहे हैं। धोनी हमेशा अपना जन्मदिन सादगी से मनाना पसंद करते हैं। लेकिन वहीं उनके फैंस पहले से ही धोनी का जन्मदिन सेलिब्रेट करना शुरूकर देते हैं। क्रिकेट की दुनिया में धोनी ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। लेकिन उनको सफलता के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। हालांकि जब जज्बा बड़ा होता है, तो कुछ भी मुश्किल नहीं होता है, यह महेंद्र सिंह धोनी ने साबित कर दिखाया। तो आइए जानते हैं उनके जन्मदिन के मौके पर महेंद्र सिंह धोनी के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

झारखंड के रांची शहर में 07 जुलाई 1981 को महेंद्र सिंह धोनी का जन्म हुआ था। एक छोटे से शहर से होने के बावजूद भी धोनी ने अपनी कड़ी मेहनत, प्रतिभा और जुनून के साथ अपने सपने को पूरा किया। महेंद्र सिंह धोनी को लोग प्यार से माही भी बुलाते हैं। बता दें कि उन्होंने अपने करियर की शुरूआत एक छोटे से मैदान से की थी।

माही छोटे से मैदान में क्रिकेट नहीं बल्कि फुटबॉल खेला करते थे। दरअसल, वह अपनी टीम के गोल कीपर थे। उनकी फुर्ती से बॉल लपकने की कला ने कोच को इंप्रेस किया और माही को देखकर कोच ने अपना मन बदल दिया और उन्हें क्रिकेट में दाखिला दिला दिया। दिल में आग और दिमाग में बर्फ लिए महेंद्र सिंह धोनी ने ऐसा बल्ला घुमाया कि उन्होंने लोगों का दिल जीतना शुरूकर दिया। धोनी ने टीम इंडिया के सफल कप्तान के तौर पर अपनी जगह बनाई और उनकी कैप्टनसी में भारतीय टीम ने आईसीसी टी20 विश्व कप, आईसीसी वनडे विश्व कप और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीती। भारतीय, माही को बतौर टीम इंडिया के कप्तान और उनकी उपलब्धियों के लिए पसंद करते हैं। लेकिन आपको बता दें कि माही क्रिकेटर नहीं बल्कि सेना में भर्ती होना चाहते थे। इस बारे में माही ने खुद खुलासा किया था। दरअसल, मिलिट्री के पैराशूट रेजीमेंट में धोनी ने एक बार जवानों के साथ टाइम स्पेंड करने के दौरान बताया था कि वह हमेशा से फौजी बनना चाहते थे। धोनी ने बताया कि उनको हाइट से डर लगता है, लेकिन इसके बाद भी माही ने जवानों के साथ फैन जंप किया। धोनी ने बताया कि भारतीय सेना की वर्दी में कुछ खास है, क्योंकि उनको फैन जंप के दौरान थोड़ा भी डर नहीं लगा। बता दें कि साल 2011 में वर्ल्ड कप जीतने के बाद महेंद्र सिंह धोनी को भारतीय सेना के टेरिटोरियल आर्मी में लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद रैंक दी गई थी। इस सम्मान को लेने के लिए माही मानद रैंक लेफ्टिनेंट कर्नल की वर्दी पहनकर गए थे। इसके अलावा साल 2018 में उनको पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

मरीज़ों को सहज और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं का प्रदाय सुनिश्चित करें : उप-मुख्यमंत्री

चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाताओं ने विभाग के सशक्तिकरण के प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से मध्यप्रदेश के चिकित्सा महाविद्यालयों के अधिष्ठाताओ ने भोपाल के निवास कार्यालय में सौजन्य भेंट की। अधिष्ठाताओं ने पे-प्रोटेक्शन, लीव-प्रोटेक्शन, सर्विस-प्रोटेक्शन और नॉन-प्रैक्टिसिंग एलाउंस के बारे में उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल द्धारा किये जा रहे प्रयासों के लिये आभार व्यक्त किया और इन्हें शीघ्र लागू करने के लिये निवेदन किया। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने निर्देश दिये कि चिकित्सा महाविद्यालयों में छात्रों की शिक्षा बेहतर करने के लिये प्रयास करें। समस्त अधिष्ठाता अस्पताल के अधीक्षकों के साथ समन्वय कर मरीजों को सहज और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सकीय सेवाओं के प्रदाय के लिए व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करें। अधिष्ठाताओं ने महाविद्यालय के संचालन, अधोसंरचना विकास एवं उन्नयन, प्रशासनिक व्यवस्था, वित्तीय आवश्यकता और मेंटेनेंस सहित अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के संबंध में उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल को अवगत कराया। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने शीघ्र आवश्यक सहयोग मुहैया कराने की बात कही।

मेडिकल कॉलेज में प्रशासकीय अधिकारी (वित्त) की नियुक्ति, महाविद्यालयों के उन्नयन, हॉस्टल और अस्पतालों के सिविल और इलेक्ट्रिक उपकरणों के मेंटेनेंस, लेक्चर हॉल और प्रदर्शक रूम को स्मार्ट क्लास में विकसित करने के लिये बजट उपलब्ध कराने का अधिष्ठाताओं ने अनुरोध किया। राष्ट्रीय और अंतरर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में सहभागिता के लिये नीति बनाने का अनुरोध किया ताकि चिकित्सा शिक्षक और छात्र अपनी रिसर्च को विश्वस्तरीय प्लेटफार्म पर प्रस्तुत कर सकें। बैठक में डॉ प्रमेंद्र सिंह ठाकुर अधिष्ठाता बीएमसी सागर, डॉ कविता सिंह अधिष्ठाता जीएमसी भोपाल, डॉ धाकड अधिष्ठाता ग्वालियर, डॉ सुनील अग्रवाल अधिष्ठाता रीवा, डॉ परमहंस अधिष्ठाता शिवपुरी, डॉ मनीष निगम अधिष्ठाता विदिशा और डॉ मरावी अधिष्ठाता दतिया शामिल हुए।

शासकीय महाविद्यालय में किया गया वृक्षारोपण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत रविवार को महापौर योगेश ताम्रकार एवं नगर निगम आयुक्त शेर सिंह मीना की उपस्थिति में शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना में वृक्षारोपण किया गया।

इस अवसर पर प्राचार्य डॉ शिवेश सिंह, एनएसएस प्रभारी डॉ क्रांति मिश्रा तथा छात्र-छात्राओं ने सहभागिता निभाई।

बेटियों के लिए पुलिस भर्ती एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग हेतु पंजीयन अब 9 तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजनान्तर्गत युवतियो/बालिकाओं के लिए पुलिस भर्ती एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए नि:शुल्क कोचिंग देने हेतु 30-40 युवतियों/बालिकाओं का नवीन बैच का संचालन किया जा रहा है।

जिसमें 18 से 28 वर्ष, (आरक्षित वर्ग 18 से 33 वर्ष) तक की बालिकायें शामिल हो सकती है।

प्रशिक्षण तीन माह दिया जायेगा। प्रशिक्षण हेतु इच्छुक युवतियों/बालिकायें 9 जुलाई तक जिला बाल संरक्षण ईकाई कन्या धवारी स्कूल के पास प्रात: 11 बजे से सायं 4 बजे तक पंजीयन करा सकती हैं। इस संबंध की विस्तृत जानकारी मोबाइल नम्बर 9589527166 से प्राप्त की जा सकती है।

नाबालिग रेप पीड़िता ने जहर खाया, वेंटिलेटर पर

आरोपी करीबी रिश्तेदार, मां बोली- बेटी 7 माह की प्रेग्नेंट, इसके बाद भी दुष्कर्म की कोशिश की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती 17 साल की रेप विक्टिम को ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है। उसने जहर खाकर खुदकुशी की कोशिश की। वह 7 महीने की प्रेग्नेंट है। डॉक्टर के मुताबिक, लड़की की हालत नाजुक है। हम उसे बचाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

4 जुलाई को मैहर जिले के मुकुंदपुर में नाबालिग ने दुकान से जहर खरीदा और वहीं पर खा लिया था। 3 दिन से वह आईसीयू (इंटेंसिव केयर यूनिट) में है। आरोपी उसका करीबी रिश्तेदार है। मुकुंदपुर का रहने वाला है। लड़की और उसका परिवार रीवा जिले के जवा में रहता है।

मां ने बातचीत में बताया, श्बेटी के शरीर में बदलाव देखकर जब हमें शक हुआ तो उसने रोते हुए आपबीती बताई। बेटी के गर्भवती होने के बाद भी आरोपी ने 4 जुलाई को उसके साथ दुष्कर्म करने की कोशिश की।

मां बोली- बेटी ने जहर खाया या उसे खिला दिया, नहीं पता- लड़की की मां का कहना है, श्मुझे तो यह भी नहीं पता कि जहर उसने खाया है या फिर उसे खिला दिया गया है। दुआ कर रही हूं कि वो किसी तरह से जिंदा बच जाए। मैं पिछले 4 दिन से ठीक से सोई नहीं हूं। आंख खुली रखती हूं कि मेरे पलक झपकते ही बेटी को कुछ हो न जाए।

पीड़िता की मां के मुताबिक, श्मामला अप्रैल 2023 का है। मैं और पति रिश्तेदारी में गए थे। इसी समय आरोपी ने बेटी के साथ रेप किया, इसके बाद उसे धमकाते हुए शोषण करता रहा। उसने धमकी दी कि घर में किसी को बताया तो जान से मार देगा।श

आरोपी के परिजन ने शादी से मना किया- पुलिस के मुताबिक, गर्भवती होने के बाद लड़की अंदर से टूट गई। उसे एक ही उपाय नजर आ रहा था कि उसी युवक से शादी कर ले, जिसने उसके साथ रेप किया है। उसने युवक से शादी करने का कहा। वह उसे बाइक से अपने घर मुकुंदपुर ले आया। युवक के घरवालों ने भाई-बहन के रिश्ते का हवाला देकर दोनों की शादी कराने से इनकार कर दिया। लड़की के साथ बुरा बर्ताव करते हुए घर से निकल जाने को कहा। इसके बाद लड़की ने मुकुंदपुर के बाजार में एक दुकान से जहर खरीदकर खा लिया।

आरोपी गिरफ्तार, लड़की बयान देने की हालत में नहीं- रीवा की महिला थाना पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज कर लिया है। लड़की फ्लिहाल बयान देने की हालत में नहीं है। सीएमओ यब्लेश त्रिपाठी के मुताबिक, लड़की को नाजुक हालत में अस्पताल लाया गया था। उसकी हालत अभी भी बहुत अच्छी नहीं है। एडिशनल एसपी अनिल सोनकर के मुताबिक, आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। मैहर जिले के ताला थाने में उससे पूछताछ की जा रही है। लड़की की हालत ठीक होने पर उसके बयान लिए जाएंगे।

नगरीय विकास राज्यमंत्री बागरी आज सतना आयेंगी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी 8 जुलाई को प्रात: 6:40 बजे रेवांचल एक्सप्रेस से सतना पहुंचेंगी।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रतिमा बागरी प्रात: 10 बजे विधानसभा क्षेत्र रैगांव के कार्यालय में जनता दरबार लगाकर जन समस्यायें सुनेंगी। राज्यमंत्री बागरी इसी दिन दोपहर 3 बजे सिंहपुर पहुंचकर वृक्षारोपण कार्यक्रम में शामिल होंगी।

सावित्रीबाई फुले स्व. सहायता समूह योजनांतर्गत आवेदन 30 जुलाई तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति सतना ने बताया कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुसूचित जाति एवं विकास निगम के माध्यम से सावित्रीबाई फुले स्व. सहायता समूह योजना प्रारंभ की गई हैं। योजना अंतर्गत अनुसूचित जाति वर्ग में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली महिलाओं के पंजीकृत समूह में 18 से 55 वर्ष की आयु वर्ग की 10 महिलाओं का समूह गठित किया जायेगा।

जिनमें स्वरोजगार के लिए बैंकों की सहायता से सहायता 20 हजार से 2 लाख तक ऋण उपलब्ध कराया जायेगा। आवेदक समस्त आवश्यक दस्तावेज जैसे आय, जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, समग्र आईडी, इत्यादि योजना से संबंधित जानकारी के लिए कार्यालय जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति मर्यादित सतना में संपर्क कर सकते हैं।

बेला-गोविंदगढ़ मार्ग पर बेकाबू हो कर पलटी बस

एक यात्री की मौत, 5 गंभीर घायल

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना की बेला पुलिस चौकी अंतर्गत बेला-गोविंदगढ़ मार्ग पर रविवार की शाम लगभग साढ़े 4 बजे महारानी ट्रेवल्स की बस नंबर क्स्1च् ब् 5585 बेकाबू हो कर पलट गई। जिससे एक की मौत हो गई जबकि पांच गंभीर घायल हो गए। वहीं, कुछ यात्री मामूली घायल हैं। स्थानीय लोगों ने मौके पर पहुंच कर बचाव के प्रयास शुरू किए और पुलिस को सूचना दी। बेला चौकी पुलिस ने घायलों को एम्बुलेंस की मदद से संजय गांधी मेडिकल हॉस्पिटल रीवा भेजा। घायलों में से एक की हालत बेहद नाजुक थी।

पुलिस ने बताया कि मृतक के बारे में अभी जानकारी नहीं मिल पाई है। उसे सीधे अस्पताल भेज दिया गया था। दुर्घटना स्थल पर एक आधार कार्ड मिला था जिसमे संतोष कुमार पटेल लिखा था। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि वह कार्ड किसका है। दुर्घटनाग्रस्त बस महारानी ट्रेवल्स की थी जो सतना से ब्यौहारी जा रही थी। चतुर्वेदी ट्रेवल्स की बस और एक ट्रक को ओवर टेक किया। इसी दौरान बस स्लिप हो गई और बेकाबू हो कर पलट गई।

हाईवे किनारे मिला युवक का शव

घर से शनिवार को निकला था, परिजन जता रहे हत्या की आशंका

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में नेशनल हाईवे-30 सोहागी में कचरा प्लांट के बगल में रविवार को युवक का शव मिला है। मृतक की पहचान सुरेंद्र साकेत पिता रघुनाथ साकेत ग्राम सतपुड़ा के रूप में की गई है।

युवक शनिवार को सोहागी पहाड़ पर स्थित अड़गड़ नाथ मंदिर में दर्शन करने का कहकर गया था। इसके बाद घर वापस नहीं पहुंचा। रविवार सुबह ग्रामीणों ने युवक का शव देखा। पुलिस को सूचना दी गई। पूरे मामले में परिजनों के द्वारा हत्या की आशंका जताई जा रही है।

एफएसएल टीम ने जांच की- सूचना के बाद मौके पर पहुंची सोहागी पुलिस और एफएसएल की टीम ने साक्ष्य इकट्ठे किए हैं। सोहागी थाना प्रभारी के मुताबिक मौत किन परिस्थितियों में हुई है, इसका खुलासा जांच के बाद ही हो पाएगा। फ्लिहाल शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। मर्ग कायम कर पूरे मामले को जांच में लिया गया है। परिजनों के बयान लिए जा रहे हैं।

जिला सलाहकार समिति की बैठक 10 जुलाई को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला स्तरीय सलाहकार समिति की त्रैमासिक बैठक मैहर कलेक्टर श्रीमती रानी बाटड की अध्यक्षता में 10 जुलाई को शाम 5 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई है। सभी विभागीय अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण योजना अंतर्गत करें आवेदन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति सतना ने बताया कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षित बेरोजगारों को डॉ. भीमराव अंबेडकर आर्थिक कल्याण योजना अंतर्गत अनुसूचित जाति वर्ग के 18 वर्ष से 55 वर्ष की आयु वर्ग के अशिक्षित बेरोजगार युवक/युवतियों को स्वयं का स्वरोजगार स्थापित करने हेतु इकाई लागत 10 हजार से 1 लाख तक का ऋण बैकों के माध्यम से वितरीत किये जायेगें। जिस पर 7 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज अनुदान अधिकतम 5 वर्षो तक नियमित रूप से ऋण भुगतान (निर्धारित समय एंव राशि) की शर्त पर निगम द्वारा दिया जायेगा।

आवेदन पत्र ऑनलाइन वेबसाईट पर भरे जा सकते है। अधिक जानकारी के लिए जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति सतना से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

प्लेसमेंट कैम्पस ड्राइव 9 जुलाई को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्राचार्य शासकीय आईटीआई सतना द्वारा बताया गया कि पीथमपुर द्वारा अप्रेन्टिस शिप हेतु 10वीं एवं इंजीनियरिंग ट्रेड में शासकीय आईटीआई से एनसीवीटी/एससीवीटी में वर्ष 2022, 2023, 2024 में 60 प्रतिशत प्राप्त करने वाले पात्र उम्मीदवारों के लिए 9 जुलाई 2024 को प्रात: 10 बजे से शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था सतना में एक दिवसीय प्लेसमेन्ट/कैम्पस ड्राइव का आयोजन किया जा रहा है। कैम्पस ड्राइव में 18 से 25 वर्ष आयु तक के पुरूष बेरोजगार आवेदक जो निर्धारित योग्यता पूरी करते हैं। वे अपने साथ 3 प्रति में बायोडाटा, आधारकार्ड, बैंक खाता विवरण, पासपोर्ट फोटो एवं शैक्षणिक योग्यता संबंधित दस्तावेजों के साथ उपस्थित हो सकते है।

रामनगर पुलिस के हत्थे चढ़े 3 लुटेर

कट्टा और चाकू की नोंक पर दिन दहाड़े दंपती से लूटा था नकदी-जेवर

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर की रामनगर थाना पुलिस ने लूट की वारदात को अंजाम देने वाले 3 आरोपियों को गिरफ्तार कर लूट का माल बरामद किया है। आरोपियों को अदालत में पेश कर जेल भेज दिया गया है। मैहर की रामनगर थाना पुलिस ने जिगना-हिनौती रोड पर स्थित ग्राम झोंपा में 27 जून को दम्पति के साथ दिन दहाड़े हुई लूट की वारदात को अंजाम देने वाले 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों में सुग्रीव उर्फ लक्खा प्रजापति पिता रामनाथ प्रजापति (23) निवासी निपनिया थाना सिटी कोतवाली जिला रीवा, समीर उर्फ छोटा उर्फ छोटू साकेत पिता बाबूलाल साकेत (24) निवासी ग्राम जिउला थाना समान जिला रीवा एवं श्रीनिवास उर्फ विकास काला उर्फ विकास कुशवाहा पिता भारत कुशवाहा (22) निवासी ग्राम करौंदी थाना गुढ़ जिला रीवा शामिल हैं।

पुलिस ने बताया कि 27 जून को सीधी जिले के रामपुर नैकिन थाना अंतर्गत ग्राम बरदैला निवासी प्रदीप साकेत अपनी पत्नी गुड़िया साकेत के साथ हिनौता-जिगना रोड पर जा रहे थे। शाम लगभग साढ़े 5 बजे तीनों आरोपियों ने उनका रास्ता रोक लिया और कट्टा-चाकू अड़ाकर उनसे नकदी, मोबाइल फोन और महिला के जेवर लूट लिए।

घटना की शिकायत रामनगर थाना में दर्ज कराई गई थी। थाना प्रभारी टीकाराम कुर्मी ने आरोपियों की तलाश शुरू की और उन्हें गिरफ्तार कर लूट के माल बरामद कर लिया। आरोपियों के कब्जे से बिना नंबर की बाइक, कट्टा और चाकू भी जब्त किया है।

जिले में अब तक 128.1 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिले में इस वर्ष 1 जून से 7 जुलाई 2024 तक 128.1 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 265.4 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 102.1 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 105.9 मि.मी, बिरसिंहपुर में 101 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 57 मि.मी., नागौद में 144.6 मि.मी., जसो (नागौद) में 43 मि.मी. एवं उचेहरा में 206 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है। गत वर्ष इस अवधि में 125 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई थी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।